ग्रीव नाम विपति पायकों नमितहै मस्तकजाको ऐसे जो सुग्रीव ताके दुखको जोकाल तामोंएकनाम मुख्य बंधोनाम भाई समान हितकारीअर्थात् बालिकरिके जो विपत्ति तेहसमैमो सहायकरि सुग्रीवकेप्राणकोरक्षक यातुधानजो राक्षसमो उद्धतनामऐश्वर्यादि करिगर्वीताको जो क्रोधसोईकालरूप अग्निभयोताकेहरनिहार सिद्धादिके आनन्दकों समुद्ररूप अर्थात् आनन्दके दाता ग्यारहों रुद्र मो अग्रणी नाम प्रथम गिनती जाको अर्थात् श्रेष्ठविश्व विषै जितने विद्यावानतामो श्रेष्ठविश्वमो विदितजो वीरतेहके मध्यमो चक्रवर्त्ती समान अर्थात एक एक मंडलके राजा सब तिन सबके मध्यमें चक्रवर्त्ती राजा तैसे बीरहूमो राजारूप सामगाता नाम सामवेदकेगावनेवालेतेहसबमो श्रेष्ठकामदेवके जीतनेवाले जितने तिन्हमेंश्रेष्ठरामजूकेहितकारीतथाश्रीरामजूके भक्तनके अनुवर्त्ती नाम आधीन अर्थात् राम भक्तन्हको स्वामी मानि करि दासवत् आधीन होकरिरुचिपालन करतहैंयहाऔर जो राम भक्तसबमें हैं अनुवर्त्तीजेहके अर्थात् महावीर को जो आचरणता को शास्त्र तेंसुनिकरि अनुनामपोछेंवर्त्तीनामवर्ततहैं अर्थात्करतहैं संग्राम को जयतथा श्रीरामजूको कुशलमंगलरूप संदेसोहर नामलेजाने वाले अर्थात् भरतजूतें श्रीरामजूको जययुक्त आगमनकहत भये समस्त·अयोध्या विषैकुशलमंगल कहिदेत भये यहा कोशला जो अयोध्याताकों कुशलऔ कल्याण भाषी नाम कहत भये अर्थात् भरतजूके यहांते फिरिकरि यावत् रामजू अयोध्या नहीं पहुंचे तावत् अयोध्याकोकुशलमङ्गल श्रीरामजूकौ सुनावतभये यह अर्थ है श्रीरामजूको विरहरूप जो सूर्यतेहकरिके जरेहुये जो भरतादिकतथा और जोस्त्रीपुरुष तेह सबको शीतलकर्त्ता कल्प शाखी नाम कल्पवृक्ष समान अयोध्याजू मोआयकरि श्री रामजू राज्याभिशेषपाय करिसिंहासनके ऊपर आसीन नाम बैठत भये तेह समैमो श्रीरघुबरको सोभादेखि निर्भर नाम अतिशय हर्ष करि अपनो मनोरथ पूर्ण विचारि नृत्य करत भये ऐसो जो महावीर सोजययुक्तरहैारामजूसंभ्राजनामसम्यक् राजसिंहासनपर शोभत तहापाठ भेदकरि समाज नाम चक्रवर्त्ती जो रघुवर सो शोभा सहित तुलसी को जो अन्तष्करण सोई रामपुर अयोध्या भयो तामो समाज सहित विहार करैं यह प्रार्थना है ॥ २१ ॥

मू०। जयतिवातसंजात विख्यातविक्रमबृहद बाहुबलविपुल बाल-
धिबिशाला। जातरूपाचलाकार विग्रहलसतलोमविद्युल्लता
ज्वालमाला। जयतिबालार्कबरबदनपिङ्गलनयनकपिशकर्कश
जटाजूटधारी। बिकटभ्रुकुटीवज्रदशननखवैरिमदमत्तकुञ्जर
पुञ्ज कुञ्जरारी। जयतिभीमार्जुनव्यालसूदनगर्व हरधनंजय
रथ त्राणकेतू। भीषमद्रोणकर्णादिपालितकालदृक सुयो-
धनचमूनिधनहेतू। जयतिगतराज्यदातार संसार सङ्कटद-
नुजदर्पहारी। ईतिअतिभीतिग्रहप्रेतचौरानल व्याधि बाधा
शमन घोरमारी। जयति निगमागमव्याकरण करणलिपि
काव्यकौतुककलाकोटिसिन्धो। सामगायकभक्तकामदायक
वामदेवश्रीरामप्रियप्रेमबन्धो। जयतिधर्मांशुसंदग्धसंपाति
नवपक्षलोचनदिव्यदेहदाता। कालकलिपाप संतापसंकुल
सदाप्रणत तुलसीदासताततमाता॥ २८॥

टी०। वायुतेंउत्पन्न विदितहै पराक्रम जाकोबड़े हैं भुजाबहुत
है बलबड़ोहैपुच्छ जाकीजातरूप जोसुवर्ण अचलनामपर्वत अर्थात्
सुमेरुततुल्यहै आकारबिग्रहनामशरीरको शोभतहै लोमजोरोम
तेहविषैंबिजुलीकीलताजो समूहतेहकाज्वालजोलहरिताकोमाल
नामसमूहसोभतहै प्रातकालके जो सूर्यऐसेंहैंश्रेष्ठमुखकेबरणतथा
प्रकाश पीत बरणहैनेत्र कपिशनाम भूरे कर्कस नामकठोर जटा
कोजूटनामजूड़ा ताकोधारन कियेबानरके स्वरूप वर्णनमें जटाक-
हनोअसंगतहोतहै सोशिवरूपहैं यहतेदोषनहींयहाजबजैसोचाहै
तब तैसोरूप ग्रहण करतहैं स्वतंत्रता के हेतु तें जटावर्णन करनो
अयुक्त नहीं टेढ़ेहैं भौंहजाकेवज्रसमान दांतनखबैरी जोसबमो भये
मदकरिकेमत्त हाथिन्हके समूह ताकेनाशकरबेको कुंजरारीनाम
सिंहरूप भीमअर्जुन तथा व्यालजो सर्पताको सूदननाम नाशक
जो गरुड़जू तेहके गर्वके हरणकर्ताताकीबन पर्वमें कथाहै युधि-
ष्ठिरादिकों जबबन भयो है तौनिपर्वतपरमहाबीरसोयेरहेहैंतहां
भीमसेनकों बलकागर्व बूझिकरि श्रीमहाबीरपूछकोबढ़ायराखा
बन्द करिदेत भयेभीमसेन जबराखा छोड़बेकों कहेतब महाबीर
आज्ञादिये जोपूछकोंटालिकरिचलेजावसोअपने बलकरिभीमसेन
देर पर्यन्तपूछको टालतेरहेपूछहिल्योभीनहीं प्रसंगतेंभीमसेनको
गर्वनाशकिये तथाकर्णऔ अर्जुनतेंजबसंग्रामआरंभभयोतबअर्जुन

कोंअभिमान भयोकीमेरे बाणकरिकर्णकोरथ कोसन्ह उड़िजाय है कर्णकेबाणतेंमेरोरथ किञ्चितचलायमाननहोयहै यहहेतुतें अन्तःकरण में अर्जुनको अभिमान भयो कि हम ऐसो वीरपृथ्वी में दूसरो नहींहै यह अभिप्राय श्रीभगवान बूझिकरिश्रीमहाबीरजूको कहे कि तुम रथतें उतरि परो जब महाबीर उतरि गयेतब जितनो कर्णको रथहटत रह्यो तेहतें कर्णके बाणते अर्जुनकोरथ दूर जायपड्यो तब अर्जुन भगवानतें पूछेकि हे भगवान यह कौन कारण भयोजेहितें मेरोरथ इतनीदूरउड़ि आयोतब श्रीभगवान कहेकि रथमेंमहाबीर थांभेरहे हैंसो महाबीरकोई हेतुतेंउतरि गये तबकेहकेबलतें रथथंभेयह रीतितें अर्जुनकेगर्वकों छुड़ायफेर रथपर विद्यमानभयेतथा गरुड़जूको अपनेशीघ्रगतिको अभिमान रह्यो एकसमयमें श्रीभगवान गरुड़जूतें कहेकि महाबीर जूकों बोलाय लै आयो सो गरुड़जू श्री महाबीर जूतें आयकहेकितुम कोभगवानबोलायेहैं तबमहाबीरजूकहेकि तुम हमरे सङ्गपहुंचोगे नहीं सो तुमआगे चलोहमपीछेतें चलेआवतहैं सो गरुड़केहृदय मेंयह वचनको प्रतीति न भयो अतिशीघ्रताकरि चले सो श्रीभगवान के निकट पहिलेते महाबीरकों बैठे देखे गरुड़जू आश्चर्य माने यह प्रसंगते गरुड़जूको गर्व छोड़ाये यह इतिहास स्कन्धपुराणको कहे फेर कैसे महाबीर हैं अर्जुन के रथको रक्षा के हेतु भीष्मादिकरि रचित काम इकनाम काल समान दृष्टि ऐसी जो दुर्योधन कीचमूनाम फौजताके विधननाममनाशको हेतुहैं गयो जो राज्य तेहिके देने वाले अर्थात सुग्रीवबिभीषणके राज्य प्राप्त को कारण महाबीरहैं सो श्री रामायणके कथाकरि विदितहै संसार के सङ्कट को हरनिहारहैं दानवन्हको दर्पजोगर्वताके नाशकर्त्ता ईतिनाम अति दृष्टि १ अनावृष्टि २ मूसन्ह करिके जो खेत विषैं उपद्रव ३ टीड़ी करिके जो उपद्रव ४ तथा अपने परिवार के विरोध करि जो उपद्रव ५ तैसे राजादि करि के जो दुःख ६ येछौ ईति भई ताकोजो अत्यन्त भय तथा ग्रहादि करिजो बाधानाम पीड़ा औ भयानक जो मारी नाममरी की तेहिसबके शमननाम शान्ति कर्त्ता वेद आगम जो पञ्चरात्रादि और व्याकरण तेहिके करणलिपि नाम श्रीसूर्यकेसुखतें अध्ययनकरि लिखनेवाले काव्यको कौतुकनाम रहस्य तथाकला नाम और जो कोटिन्ह विद्या लोः

किक पारलौकिक तेहिके समुद्र सामवेद के गावने वालेभक्तन्ह के कामना के दाता वामदेव नाम शिवरूप श्रीरामजूको प्रेम अति प्रिय जाकों ताके बन्धो नाम हितकारी घर्म नाम तप्त अंसुनाम कीर्ण अर्थात् सूर्यतेहिकरिके जल्यो जो सम्पाति तेहिकों समुद्रके किनारे दरशन देकरि नवीन पक्ष दिव्य नेत्र दिव्य देह के दाता कलिकाल को जो पाप तेहितें संताप जो क्लेश तेहि करि संकुल नाम व्याप्त सर्वदा ऐसो जो प्रणाम करत तुलसी ताको पिता माता रूपसो जय युक्त रहो ॥ २८ ॥

मू०। जयतिनिर्भरानन्दसन्दोह कपिकेशरीकेशरीसुअनभुवनैकभर्ता।दिव्यभूव्यंजनामंजुलाकारमणिभक्तसन्तापचिन्तापहरता। जयतिधर्मार्थकामापवर्गदविभो ब्रह्मलोकादिवैभवविरागी। बचनमानस कर्मसत्यधर्मव्रत जानकीनाथ चरणानुरागी। जयति बिहगेशवलवुद्धिबेगातिमद मथनमन्मथमथन ऊर्द्ध रेता।। महानाटकनिपुणकोटि कविकुलतिलक गान गुणगर्व गंधर्व जेता। जयतिमन्दोदरीकेशकर्षण विद्यमान दशकंठ भटमुकुटमानो। भूमिजा दुःखसंजात रोषांतकृतयातनाजंतु कृतयातु धानी। जयतिरामायण श्रवणसंजात रोमांचलोचनसजल शिथिलवानी। राम पदपद्ममकरन्दमधुकर पाहिदासतुलसी शरण शूलपानी ॥ २९ ॥

टी० अतिशय आनन्दके सन्दोहनाम परिपूर्णपात्र कपिकेशरी नामवानरन्ह मेसिंहरूपतथाकेशरीनामजो बानर ताकेपुत्रभुवन के एकनाम मुख्यस्वामी दिव्यदृष्टिविषैं अंजना नामजो सोईमंजुल नामसुन्दर आकर नाम खानिभई तेहिविषै मणि नाम महाबीर रूप चिन्तामणि उत्पन्नभयो चिन्तामणि जाकों प्राप्त होतहैताको दुखछुड़ावेहै यह महाबीर रूपमणिभक्तन्हको सन्ताप तथा चिन्ता इहलोक परलोक को अपहरता नाम नाशकर्त्ता घर्म अर्थ काम तथा अपवर्ग नाम मोक्षतेह सबके दनाम दाता विभो नाम समर्थ ब्रह्मलोकादि नाम ब्रह्मलोक लैकरि और जितने लोक तथा मृत्युलोकयह सबको वैभव नाम ऐश्वर्य तेहतें विगतभयो है राग जाको अर्थात् सबतें विराग नाम सब पदार्थतें विराग कहे कहूं रागऊहै कि नहीं तेहपर कहेहैं वचन मनकरि सत्यहै धर्म और व्रतजाको कौन धर्मव्रत तेह कों जनावतहैं श्रीजानकी नाथजू के

चरणकमलविषैं अनुराग जाकों अर्थात् रघुवर चरणकमल अनुराग सोई धर्म व्रतजाको विहंगेशनाम पक्षिन्हकेईश जोगरुड़ताको सलवृद्धि बेगको अत्यन्त जोमद ताके मथन करनेवाले अर्थात् दूर कर्त्ता गरुड़के गर्व नाशको इतिहास पूर्वलिखे मन्मथ जोकामदेव ताकों शिवरूपी जो महाबीर सो नाशक हैं ऊर्द्धरेता नाम नहीं च्युतभयो बीर्य जाको अर्थात् बालब्रह्मचारी महानाटकके करबेमो निपुण नाम प्रवीण कोटिन्ह कविताके कुल जो समूह तेहविषैं तिलकनाम भूषणरूप अर्थात् सबकविन्हमो श्रेष्ठगानगुण जोगानविद्याताम़ो गन्धर्वन्हके जीतनेवाले जेहसमयमो रावण यज्ञकरन लग्यौ तेहयज्ञके नाशकरबेनिमित्त श्रीस्वामीके आज्ञाकरि महल मो कूदेहैं तेहिकालमो मन्दोदरीको केश जो बाल ताकों पकड़ि करि कर्षणनाम खींचतभये यज्ञविघ्नके अर्थ केहिस्थानमें सोकहत हैं विद्यमाननाम प्रत्यक्षहै रावणजहां कैसोरावणहै भटमुकुटनाम बीरन्ह मो जोमुकुट तुल्य अर्थात् बीरन्हके मध्यमो जोअत्यन्त श्रेष्ठ ताहूमो मानीनाम सबतें अधिक बीरताको अभिमान जाकोंयाको यहभावभयो कि जेह मन्दोदरी के ओर इन्द्रादिक को सामर्थ्य देखबेकी नहीं ताकों रावणके देखते अनाथकी नाईं बालपकरि करि घसीटे यातेयह निश्चयभयो कि महाबीर समान श्रीमहाबीर हैं द्वितीयबीर उपमायोग्य नहीं तथा यहदेखलये कि श्रीरामजूके विमुखभये रावण ऐसोबीर जाके आधीन इन्द्रादिक ताकी यह फजीहती तो सामान्यजीव जो विमुखहोय ताके दुर्गतिकों को कहिसकै है भूमिजा जो श्रीजानकी महारानी ताको जो दुःख अर्थात् अशोकबाटिका विषैं अनेकराक्षसिन्हको तथा सबनआनि करि कह्यौ जोअनेकदुष्टवचन ताकों छिपिकरि पेड़केऊपर सुनत रहे तेह वचनन्ह करि महारानी कों भयो जो अत्यन्तदुःख तेह दुखकरि संजातनाम उत्पन्न जो रोषनाम क्रोध तेहकरिके अन्त कृतनाम प्रलयकेकर्त्ता जोयमसे जैसें यातनानाम अनेकपीड़ा जंतु नाम जीवन्हकों कृतनाम करतहै तथा यातुधानीनाम राक्षसन्ह की सेनाताको श्रीमहाबीर यमरूप होकरि बहुतन्हकों नाशकिये जोघायल होकरि बचेताकों नानापीड़ा होतभयो यहायातुधानी नामराक्षसन्ह को स्त्रीसब जो अनेक वचन कहि महारानी कों दुःखदेतीरहीं तेहसबन्ह के पतिपुत्रादि को नाशकरि पीड़ारूप

करतभये श्रीरामायणके श्रवणकरि उत्पन्नहोतहै रोमांच जाको अर्थात् रोमसब कटहरके फलसमान शरीरविषें खड़ेहोतहैं तथा रामजू के चरणकमल विषें अनुराग रूपी जो मकरन्द नामरस ताकों भ्रमररूप होकरि निरन्तरपान करनेवाले शूलपाणी नाम शिवरूप ऐसो जो आप तेहके शरण विषैं तुलसी प्राप्त है ताकों पाहि नाम पालन करो॥ २९॥

मू०। जाकेगतिहैहनुमानकी ताकीपयजपूजिआईयहरेखाकुलिश
पषानकी। अघटितघटनसुघटबिघटनऐसी बिरुदावलीनहिं
आनकी। सुमिरत संकटसोचबिमोचन मूरतमोदनिधान
की। तापरसानुकूल गिरिजाहर लषणरामअरुजानकी।
तुलसीकपिकीकृपाबिलोकनिखानिसकलकल्याणकी॥ ३०॥

टी०। जेहपुरुषको महाबीरकी गतिहै नाम आश्रयहै ताको पैजनाम प्रतिज्ञा पूजिआई नाम सर्वकाल विषैं पूर्णहोत आई यह रेखानाम लीकवज्र तथा पाषाण के ऊपरको है अर्थात् जैसे वज्रादिके ऊपरकी रेखामिटती नहीं तैसें श्रीमहाबीरके आश्रय को जो जीवकिये तेहको सर्वमनोरथ पूर्णहोतहैं यहअन्यथाहोने वालो नहीं जो नहीं घटनेयोग्य तेहके घटावनेवाले अर्थात् बिभीषण सुग्रीवकों राज्यकीप्राप्ति कठिन रह्यो ताको सुलभकरि घटावतभये सुघटनाम जो सुलभकरि घटिरह्योहै ताकों बिघटननाम बिगाड़नेवाले अर्थात् रावण बालीकों राज्यसुलभकरिं प्राप्तरह्यो ताके नाशके हेतु होतभये मोद जो आनन्द ताके निधान नाम पात्र तेहके मूर्ति अर्थात् आनन्द के स्थितहोबे को स्वरूप जाको स्पष्ट है॥ ३०॥

मू०। ताकिहैं तमकिताकिओरकोजाके है सबभांतिभरोसोकपि
केशरीकिशोरको। जनरंजनअरिगण गंजनसुखभंजन खल-
बरजोरको। वेदपुराणप्रगटपुरुषारथ सकलसुभटशिरमोर
को। उथपेथपनथप्यो उथपनपनबिबुधवृन्दबन्दिछोरको। जल-
धिलङ्घिदहिलङ्कप्रबलदलदलननिशाचरघोरको। जाकोबाल
बिनोदसमुझिजियडरतदिवाकरभोरको। जाकोचिबुकचोट
चूरणकिय रदमदकुलिशकठोरको। लोकपाल अनुकूल
बिलोकिबोचहत बिलोचनकोरको। सदाअभय जयमुद
मङ्गलमय जो सेवकरणरोरको। भक्तकामतरुनामरामपरि

प्रणतचन्द्रचकोरको । तुलसीफलचारोकरतलयशगावतगई बहोरको ॥ ३१ ॥

टी० । जेहजीवको महावीरको अवलम्बहै ताके तरफ तमकि नामक्रूर दृष्टितें को देखिसकै है अर्थात् महावीरके भक्तन्हकोयम आदिक्रूरदृष्टिकरि नहीं देखि सकतहैं उपड़ेनो सुग्रीवादि ताके थापित करनेवाले तथा यप्यौ नामस्थिरताको प्राप्तजो रावणादि ताको उथपन नाम उखाड़ने वाले ऐसोहै पननामप्रतिज्ञा जाको देवतन्हको जो समूहताकोबन्दिछोर नामरावणादिकरिबन्धनादि ताको छोड़ावने वालेको नाम दूसरो को अर्थात् केवल महावीर के समर्थता करिदेवतन्हको दुखछूटोहै अन्यतस्पष्टहै जाको चिबुक जो दाढ़ी ताके चोटने चूर्णकियो है रदमद नाम मदरूपी दांत अत्यन्त जो कठोर बज्र ताको अर्थात् जेहि बज्रतें पर्वत सब चूर्ण होतहै सो जाके दाढ़ीमें लगिकरि अत्यन्त कठोरता पायकरि विमुख होगयो रणरोरनाम संग्राममें क्रूरस्वभाव जाको अन्यत् स्पष्टहै भक्तन्हको कल्पवृक्षवत् सर्व कामना देवेकोनाम जाको यी रामजू पूर्णमासीके चन्द्रमातुल्य ताको एकटकहोकरि देखिवेको चकोररूप ऐसो दूसरो को चारोफल है प्राप्तहाथ विषैं ताकोजो यशगावतहैं गईबहोर को नामभयो जो ऐश्वर्यादिक तेहकोफेरि ले आवनेवाले अर्थात् जाके भाग्यमें ऐश्वर्यादि नहीं ऐसउभाग्य-हीन जीव जो शरणहोय ताको ऐश्वर्यादि के दाता सुलभ पदन को अर्थ नहीं लिखे हैं ॥ ३१ ॥

मू० । ऐसीतोहिनबूझिये हनुमानहठीले । साहबकहूंनराम से तोसेनवसीले । तेरेदेखत सिंहकेशिशुमेडुका लीले । जानत हैंकलितेरोउमनु गुणगणकीले । हांकसुनतदशकन्धकेभय बन्धनढीले । सो बलगयोकिधौंभये अबगर्व गहीले । सेवक कोपरदाफटेतू समरथसीले । अधिकआपतें आपनोसुनिमान सहीले । सांसति तुलसीदासको देखिसुयश तुहीले । तिहूं कालतिन्हकोभलोजे रामरङ्गीले ॥ ३२ ॥

टी० । बहुत काल गोसाईं को श्री महावीर के भजन करते व्यतीतभये श्रीरामजू को आविर्भाव अपने विषैं नहीं देखि पड़ो तब महावीरतें कहतहैं कि ऐसो आपकोन बूझियेनाम नचाहिये हे हनुमानहठीले संबोधनदेवेको यहभावहै कि तुम्हारो स्वभाव

हठीहै श्रौर के दुखको नहीं बूझते अपनौ हठतुम्हैंप्रियहै रामजू ऐसोस्वामी दूसरो कहूंनहीं श्रौर तुम ऐसोवसीलानहीं वसीला पद लोकोक्ति है जेहिके सम्बन्धतें राजन्हके निकट जेह का प्रवेश होत है सो तेहका वसीला कहावत है रामजू ऐसे खाविंद औ तुम ऐसे वसीला सो तुम्हारे देखते सिंहके बालक को भेग लीले अर्थात् सिंहरूप श्रीरामजू ताके किङ्कररूप बालक जो मैं ताकों संसार रूप भेग ग्रास करत है ऐसी न चहिये यह हेतु तें ऐसो जानतहौं कि कलिकालने तुम्हारजमानो गुणको जो समूहताकों कीलिदियो अर्थात् मंत्रकरि जो कीलो जात है तामें शक्ति नहीं रहति सो कलिकालने तुम्हारेगुणगणरूप विरदावलीको कुंठित करिदियो कैसो तुम्हारो बलहै जाके गर्जको सुनतें रावणके बन्धन नाम अङ्ग अङ्ग के गिरह ढीले नाम शिथिल होतभये सो तुम्हारो बलगयो नाम नष्टभयो किधौं गर्व गहोले नाम गर्व को गहतभये अर्थात् बल प्रभाव के रहतसंते जो अपने विरदावली को नहीं स्मरण करते तो अपनो बाना छोड़िकरि गर्वको लिये यह प्रतीति होतहै सेवक को परदाफटे है समर्थ शोलनाम युक्त जो तुम ताके देखते अर्थात् नेचके ओटमें जो आपनो भृत्यसो दुर्गति कों प्राप्तहोय तो विशेष दुखह नहीं होय श्रौर जो स्वामी के सन्मुख कोऊ चाकरको बेइज्जति करतौ मरणान्त क्लेश होतहै ताहू पर जो शक्ति हीन होय तो सहते बने है सो आप सब सामर्थ्य युक्त ताको सेवकजो मैं सो मेरो परदा फटे है अर्थात् कलिकालरूपी राजाके भृत्य काम क्रोध लोभ मोहादि सो सब मेरो परदारूप जो ज्ञान भक्ति वैराग्य क्षमा करुणादि ताकों फाड़ते हैं अर्थात् कामादि के जो बेगतेह बेगके प्रहारकरि ज्ञानादि जो महान गुण ताकों दूरिकरिके मोकों जगत को नाचनचायो चाहत हैं सो न चाहिये काहे न चाहियें सो अगिले तुकतें कहत हैं ऐसो आपको स्वभावविदितहै कि अपनाते अपनोनाम अपने जो दास ताकों श्रीरामजूके दरबारविषैं अधिकमान नामसत्कारहोय तो आप सुनिकरि सहोलै नाम सहत हौ अर्थात् स्वीकार करत हौ याको यह भावभयोकि जेह स्वामीके दरबारमें कोईमुख्यअधिकारी रहताहै सो अपनेतें अधिक दूसरे को सत्कार नहीं सहत सो ऐसोप्राकृतजीवन्हको हृदयहै आपभागवतन्हके मुकुटमणिऐसो

विचारतहौ कि मेरे आश्रयीको मोहूतें अधिक सत्कारहोयतो परमानन्दको हेतु है ऐसो स्वभाव आपको शास्त्र औ लोकमेंविदित है पूर्वस्वभावको कहे ताके विपर्यय शासतिनाम लैभातुलसीदासको कलिकाल हत देखिकरि भी हंसतहौ तो सुयश तुहीं ल्यौ नाम तुमहूं सुयशल्यौ अर्थात् अद्यावधि लोकशास्त्रविषैऐसी बिरदावली विर्दितहै कि महावीर के आश्रय किये जो जन ताकों संसारादि हेरिके दुर्गतिनहीं होति ऐसे यशको त्यागकरि अब ऐसीख्याति कागई कि महावीरके दासन्हको कलिकाल फजीहत करैहै महावीर तमाशगीर होकरि देखत हैं अब ऐसे यशको बिदितकरो यहा व्यंगकरि कहैहैं कि जैसे खेतके ऊपरदसखांची माटीपड़ी दो खांची और सही तैसे कलिकाल रूप राजा के काम क्रोधादिकजो भृत्यतेहद्वारा तुलसीकोंनानाक्लेशदेकरि यशलियो आपहू तमाशा देखिकरि यशल्यौ यहभावहै तीनोंकालमें तिन्ह जीवन्ह कोभलोहै जो श्रीरामजू के रंगविषैं रंगेहैं अर्थात् वेदशास्त्र लोक श्रीरघुवर आश्रयकों मङ्गलरूप कहतहैं सोअब तिहके विपर्ययवेद लोक ऐसो कहैगोकि रामदासन कों सर्वथा अमङ्गलहोत है सो लोकविषैं जो कोऊ धर्मबुद्धिकाहूकों उत्तमभृत्यहोतहै सो अपनो यशतथा अपने स्वामीके यशको बढ़ावतहै यह प्राकृत जीवन्हमें उत्तम तेहका लक्षणहै औ आप तो साक्षात् ईश्वर सर्व प्रकारतें समर्थसो अपनो यश तथा स्वामीकी बिरदावली दोऊको सामर्थ रहत नाशकरतहौ यह रहस्यबूझनो चाहिये यद्वायह भावहैकि रामजूके आश्रयकरिके अवश्य मेरोकल्याण होयगो पर तुम तो यह समयमें यश लै ल्यौ यह अर्थ है ॥ ३२ ॥

मू० । समरथसुवनसमीरके रघुबीरपियारे । मोपरकीबेतोहिजौं
करिलेहिभियारे । तेरीमहिमातेंचलै चिंचिनीचिंयारे । अं-
धियारोमेरिवारक्योंत्रिभुवनउजियारे । केहिकारणजनजा-
निके सनमानकियारे । केहिअघअवगुणआपनी करिडारि
दियारे । खायेखोंची मांगिमैं तेरोनाम लियारे । तेरेबल
बलिआजलौंजगजागिजियारे । जौतोसोंहोतौफिरो मेरो
हेतुहियारे । तवक्यौं बदनदेखावतो कहिवचनइयारे । तो-
सोंज्ञाननिधानको सर्वज्ञवियारे । हौंसमुझत साईंद्रोहकी

गतिछार कियारे। तेरे स्वामी रामसे स्वामिनी सियारे।
तहं तुलसीके कौनको काको तकियारे ॥ ३३ ॥

टी०। हेसमर्थ वायुकेपुत्र हे रामजूके प्रियऐसी चहियेनहीं पर आपऊको मेरीदुर्गति होनी प्रियलगी तो जो करबेको रुचि होयसो आपऊ करिल्यो भियारेनाम रे भैया सम्बोधनहै चितऐसी कहोकि तुम्हैं ग्रहण करबेको हमारी सामर्थ्यनहींहै तो यहअत प्रतीतिकी नहीं काहेकि तुम्हारे महिमाकरिके चिंचिनीजो इमिली ताको चियांनाम बियासोऊ चलेनाम जवाहिरातके मोलमो चलिजातहै अर्थात् जवाहिरसदृश भगवतभक्तभये इमिलीके बिया के सदृश हमऐसे मन्दजीवहैं ताहूपर जो आप कृपाकरो तो जैसे जवाहिररूप भगवत भक्तन्हको भगवानरूपी जौंहरीग्रहणकरतहैं तैसे इमिलीके बियासदृश हमऐसेमन्द जीवताहूको ग्रहणहोयगो यह निस्संदेह निश्चयहै तो जो ऐसी सामर्थ्य आपकी है तो मेरे बारीको अंधेरेमे मानअरु तीनोभवनके अर्थउजेरे होतेहो। सो क्यों नाम काहे अर्थात् अपने प्रभाव तें चन्द्रमा सदृश तीनोंलोक को रावणादि जो दुष्टताको बधकराय प्रकाशतथा शीतल करतभये तबमेरे बारीकोंअमावसके रात्रिसमान अंधेरे क्योंहोतेहो। अर्थात् कलिकालकृत मेरी दुर्गतिदेखि आंखक्यों बन्दकरतेहो यहभाव है पूर्व कौन ऐसी करनी हमारी भली आपजानि आपनो जनकरि सत्कारकरतभये अर्थात् समस्त जगतकहत भयोकि महावीर गोसाईंके ऊपर अनुग्रहकियेहैं जगतको कहनोयही आपकेसत्कार करबेकी प्रतीति भई अबकौन ऐसो पाप और अवगुण मेरो देखि जेहतें अपनो आश्रयकरिके डारदिये अर्थात् त्यागकरतभये चेत कहोकि तुमहमारे आश्रयनहींहो सो नहीं खोंचीनाम बाजार मों चुटुकीमांगिकरि खाये नाम भोजनकरि देहनिर्वाहकिये तुम्हारो नाम लैकरि तथा तुम्हारेबलके अवलंबकरि बलिहारीजाव आज पर्य्यन्त जगतविषैं जागिनाम खबरदार होकरि अर्थात्जगत के स्वरूपजानि तुम्हारो आश्रय लेकरि जीवतेरहे यहतुकसोबलिमद देवेंको यह हेतु है कि पूर्वपदन्ह मों कलिकाल करिके अपने हृदयकोमलानतारूप क्लेश बिचारि बहुत कठोर वचन कहे तेहके क्षमाकरायबे निमित्तखुशामदकी बोलीबोलतहैं बलिहारी कहबे को यहभावहै यातेआप कहोकि पूर्व हम विषैं प्रतीतिकिये अब

नहींहै सो नहीं काहेकिजो तुममें मेरे हृदयको हेतुनाम प्रीति फिरी हो तो अर्थात् विमुखहोते तो तुम्हारे सन्मुख फेरमुख कैसे दिखलावते कहिवचन इयारेनाम जैसे मित्रतें प्रीतिकी बातैंमित्र कहेहैं तैसे मीठी बातें कहिकरि चेत यह कहोकि तुम चतुराई करि बात बनावतहैा ऐसो हृदय तुम्हारोनहींहै तैा तुमऐसे ज्ञान के निधाननाम पावसर्वज्ञ अर्थात् अन्तर्यामी वियानाम दूसरोंको है अर्थात् तुमतें हृदयकी बात कबछिपैगी तथा मैं हूं समभतहूं की खामोके द्रोहकरबे की गतिछारछिया है अर्थात् पंचमस्कन्ध मो जहांनर्क वर्णनकिये हैंतहां राखमैं नर्क तथाछियानाम बिष्टा मैं नर्ककहेहैं सो गोसाईं कहतहैं कि आपजो हमारे खामीतेह तें जोद्रोहकियेहोंयगे अर्थात् विमुखहोंगे तैामेरी गतिराखमैंतथा बिष्टामैं नरकविषै होंगे। यहअर्थहै आपके खामी श्रीरामजू ऐसे श्रीखामिनी श्री जानकीजू सदृश अर्थात् आपविषैं पुत्रतें अधिक ममता जेह खामी खामिनी को आपके रुचिको कदापि अन्यथा करनेवाले नहीं सो आप मोंकों त्यागकरतहैा तो तहं नाम तेह श्रीरघुबरके दरबार विषैं तुलसीके कौननाम दूसरो कौनहैतथा को नामको पूछेएहहेतुतें तुमको छोंड़िकरि काको नाम कहकर तकियारे नाम तब क्या यह लोकोक्तिहै अर्थात् तुलसीतुम्हैंछोड़ि दूसरी केहका आसराकरे एह अर्थ है ॥ ३३ ॥

मू॰। अतिआरतअतिखारथी अतिदीनदुखारी। इन्हकोबिलगनमानियेबोलहिंनबिचारी। लोकरीतिदेखीसुनीब्याकुलनरनारी।अतिबरषैअनबरषेहूंदेहिदैवहिगारी।नाकहि आयेनाथसों सांसतिभयभारी। कहिआयोकीबीछमानिज बोरनिहारी।समयसांकरेसुमिरियेसमरथहितकारी।सोउसबिधिऊपरकरैअपराधबिसारी। बिगरीसेवककीसदा साहिबसुधारी। तुलसीपंरतेरीकृपानिरुपाधिनिहारी ३४॥

टी॰। पूर्व अनेककठोरबचन कहेतेह अपराधकों छमाकरावत हैं अतिआरत नामराजादिजो प्रबल तेहकेबध बंधनकरि पीड़ित अतिखारथीनाम अपनेखारथमें अतिलोभीअतिदीननाम दरिद्रता बस भोजन बस्त्रकी प्राप्तिनहीं तेहहेतुते जो दीनता दुखारी नाम रोगादि करि जो दुख इतने क्लेशकरि जो युक्त पुरुष ताके कथनकोंसुनिकरमहात्मासबबिलगनामभेद अर्थात् उद्वेगनमानिये

नाम नहीं मानतहैं काहे कि पूर्वोक्त जो पीड़ितजीवसो विचारि नहीं बोलतहैं अर्थात् अपनेगर्जतें विचार भ्रष्टहोतहैं पूर्वोक्त जो आर्यनाताकोदृष्टान्तदेकरि देखावतहैं लोकहूमेंयहरीतिदेखीहै तथासुनीहै स्त्रीपुरुषव्याकुल होकरि अतिदृष्टितें तथाअनादृष्टितें दैवजोपरमेश्वरताकोंगालीदेतहैं अर्थात् सर्वकेस्वामीतथाब्रह्माण्ड केपालक ऐसेजो परमेश्वरताहूको जीवसबक्लेश पायकरि दुर्वचन कहतुहैंतेहिवचनको परमेश्वरजौंहृदयलौं आवेतौ अतिदृष्टिकरि जोलोक गालीदेतहैंतेहि अपराधतेंकबहूंदृष्टिहोनोनचाहिये सो दुखीजो जीवसबतेहिके बचनको परमेश्वर हृदयमें नलैआवतहैं तैसेमेरे परमेश्वर जो आपताको ऐसोई बूझनो चहिये चेतआप कहोकि अपने स्वारथको तुमचतुरहो तबमोकों इतनेकठोरवचन सुन्यतकोनाहीं क्योंकहतेहो तेहिपरकहतहैं कि कलिकालकृतजो क्लेश तेहि करिकै नाकहिं आए नाम नाकपर दम आयै।भारी ससतिनामपीड़ाभईतबस्वामीजोआपतेहितेंपूर्वोक्तजो कठोरवचन सबसोकहि आयौ नाम कहि पर्यौ ताको आप क्षमाकीबोनाम करो अपने ओर देखि अर्थात् अपनो जो भक्त वात्सल्यादि गुणसो बिचारकरि समयसाकरे नामसङ्कटके समयमें,आरत जीवस्मरण करतहैं समरथ तथाहितकारी जो अपनो स्वामीताकोसो स्वामी सब विधितें वाको ऊपरकरे नाम क्लेशतें निकाले है वाजीव को कियो जो अपराध ताको विस्मरण करिकै तथा सेवक की बिगड़ी जो बात ताको खाविंद सुधारै हैं स्वामी को सेवक प्रति ऐसा चहिये विशेष तुलसी के ऊपर आपकी कृपा निरुपाधि नाम उपाधि रहित निरारी नाम निराली अर्थात् आपके सेवा योग्य नहीं तथा कोऊ गुण नहीं केवल अपने कृपालुताकरि आप अनुग्रह किये यह अर्थ है ॥ ३४ ॥

मू० । कटुकहियेगाढ़ेपरें सुनुसमुझिसुसाईं । करहिं अनभलेको
भलोआपनीभलाईं । समरथशुभजोपाइये बिरपीरपराई ।
ताहितकेसबज्यौंनदोवारिधनजुनाई । अपनेअपनेकोभलोचहै
लोगलोगाई । भावेजोजेहितेहिभजेंशुभअशुभसगाई । बाह
बोलदैथापियेजोनिजबरिआई । बिनसेवासोपालियेसेवककी
नाईं । चूकचपलताभेरियेतूंबड़ोबड़ाई । होतआदरेढीठहैअति

नीचनिचाई। बन्दिछोरबिरदावलीनिगमागमगाई। नीको तुलसीदासकोतेरिछोनिकाई ॥ ३५ ॥

टी०। अपने कठोर कहबेकों हेतुकहतहैं कटुनाम तिक्त अर्थात कडुआ बचन कहतहैं गाढ़ परे नाम क्लेशमें पड़ेते कैसे स्वामीतें कहतहैं सो आपसुनो। अपनेजीमें सुन्दरस्वामी समुझिकरिअर्थात् क्षमाकरुणादि महानगुण जेहस्वामी विषैं तामें सोस्वामी अन-भलो जोअपनो सेवक ताहूको भलोकरतहैं अपनोभलाई विचारि करि अर्थात् अपनें स्वभावते उत्तम स्वामी को लक्षण जनावत हैं समरथनाम सबकरिबेको सामर्थ जाकी शुभी नाम मंगलरूप जो स्वामी पाइयैनाम पावेहै अर्थात् जानेहै पीर पराईनाम औरको दुःख तथा बीरनाम दुष्टन के नाश करबे कों दक्षता छितके नाम तेहिस्वामीकों सबदेखेहैं अर्थात् ऐसेस्वामी के सेवक होबेको सब इच्छाकरेहैं कैसेतहांदृष्टान्त देतहैं जैसेसबनदी समुद्र के मिलबेको इच्छाकरतिहैं यद्यपिसमुद्र नहींबोलावतहै तथाचेत ऐसोकहो कि औरे देवतन्हकों और जीव सब क्यों आश्रयकरतहैं तिहपर कहैहैं कि अपने औ अपने जो आर्थित ताको भलो सब स्त्रीपुरुष चाहत हैं तेह कामनाकरि जाको जो प्रियलगेहैं सो तेहकों भजेहैंनाम सेवनकरैहैं शुभ कामना स्वर्गादि अशुभकामना हत्याआदि लैक-रि औरके नाश अर्थ तेहकें मगाईनाम सम्बन्धकरि अर्थात् जाको जैसो कामना सोतैसो उपासना करैहै अवयह कहतहैंकि यद्यपि हम आपके किङ्कर योग्यनहीं तथापि अपनेओर देखिबांहबोलदै नाम बचनरूप बांहकरि स्थापितकरो अपने बरिआईतें तथा सेवा हीन जो मैं ताकों अपनेसेवककी नाईं पालनकरो अर्थात् अपने सामर्थकों विचारि तथा पतितपावनत्व जोगुणताकों स्मरणकैमेरे अपराधकोंविस्मरणकरि पालनकरोयहभावहैचकऔ चञ्चलतादि जोदोष सोमेरीयेनाम मेरीसम्पत्तिहै औ वडीजोबड़ाई सोतूंनाम तुम्हारी सम्पत्तिहै सो बड़ेको अपनी सम्पत्ति त्याग करनो उचित नहीं तथा लोकविषैं ऐसोरीति देखिपड़े है कि अति नीचको जो आदरकरिये तो ढीठहोतहै आदरकरतातेंनिचाई जो अपनोगुण सो प्रगटकरतहै तथा स्वान आदरपाइकरि अपने स्वामी को अ-शुद्ध करतहै मेरे कर्तव्यताकों यह दृष्टितें देखो आपको बिरदाव-ली बन्दिछोर नाम क्लेशको छोड़ानेवाली वेदशास्त्रगावेहै सोआप

को निकाई तुलसीको नोको नाम भलोकरैगी अर्थात् इसविषै कोईभलोबात तो हैनहीं पर आपकी जो भलाई पतितपावनादि गुणतेहतें मोको अपने भलेको प्रतीति है॥ ३५॥

मू०। मङ्गलमूरतिमारुतनन्दन। सकलअमंगलमूलनिकन्दन। पवनतनयसन्तनहितकारी। हृदयविराजतअवधविहारी मातु पितागुरुगणपतिशारद। शिवासमेतशंभुशुकनारद। चरण बन्दि बिनवौंसबकाहू। देहुरामपदनेह निबाहू। बन्दौं राम लषणवैदेही। जोतुलसीकेपरमसनेही ३६॥

टी०। स्पष्ट है ३६॥

मू०। लालनाड़िलेलषणहितहोजनके। सुमिरेसङ्कटहारी सकल सकलमंगलकारीपालकृपालअपनेपनके। धरणीधरणहार भंजनभुवनभारअवतारसाहसीसहस फनके। सत्यसन्ध सत्य व्रतपरमधर्मरतनिर्मलकर्मवचनमनके। रूपकेनिधानधनुपाणि पाणितूणिकटिमहावीरविदितजितैयाबड़ेरणके। सेवकसुख दायकसबलसबलायकगायकजानकीनाथ गुणगणके। भावते भरतकेसुमित्रासीताकेदुलारेचातकचतुर राम श्यामघनके। बल्लभउर्मिलाकेसुलभसनेहवसधनोधनतुलसीसेनिरधनके३७॥

टी०। स्पष्ट है ३७॥

मू०। जयतिलक्ष्मणानन्तभगवन्तभूधरभुजंगराजभुवनेशभूभारहारी। प्रलयपावकमहाज्वालमालावमनशमनसन्तापलीलावतारी। जयतिदाशरथिसमरसमरथसुमित्रासुवनशत्रुसूदनरामभरत बन्धो। चारुचम्पकवरणबसनभूषणधरणदिव्यतरभव्य लावण्य सिन्धो। जयतिगाधेयगौतमजनकसुखजनकविश्व कण्टककुटिलकोटिहन्ता। वचनचयचातुरीपरशुधरगर्वहरसर्वदारामभद्रानुगन्ता। जयतिसीतेशसेवासरसविषयरसनिरसनिरुपाधिधुरधर्मधारी। विपुलबलमूलसार्दूलविक्रमजलदनादमर्दन महावीरभारी। जयतिसंग्रामसागरभयंकर तरण रामहित करणवरबाहुसेतू। उर्मिलारवनकल्याणमंगलभवनदासतुलसीदोषदवनहेतू ३८॥

टी०। श्री लक्ष्मण जू जययुक्त होहिं अनन्त है नाम जाको भगवन्तनाम सर्व ऐश्वर्ययुक्तभू जो पृथ्वी ताकी धारण किये भुजगराज नाम शेषरूप भुवनके ईश नाम स्वामी पृथ्वी के भारहरण कर्त्ता

अर्थात् रघुकुल मेंा अवतार ले दुष्टन्हको वधकरि पृथ्वीके भारकों दूर किये प्रलयके समयमें अग्निको जा महा ज्वाल माला नाम समूह ताको वमननाम मुखतें उगिलत भये अर्थात् जगत के कारण भूतफेर जगतको जोसन्ताप मो लीलापूर्वक अवतार ग्रहण करि समननाम सान्त करतभये दाशरथी नाम दशरथ के पुत्र चम्पाके फूल समान शरीरको वरणनाम रङ्गजाको दिव्यतर नाम अति आश्चर्य भव्यनाम सुन्दर लावण्य सिन्धोनाम शोभाके समुद्र गाधेय नाम विश्वामित्र तथा गौतमजू अहिल्या के स्वामी अरु जनकजू यहतीनें महात्मन्हको जोसुख तेहके जनकनाम उत्पत्ति करबेको पितारूप अर्थात् सुबाहुके सहाय जो असुर सब ताको मारिकै विश्वामित्रकों सुखदिये अहिल्याको पापछोड़ाइ गौतम कों सुखदाता यद्यपि अहिल्याको उद्धार श्रीरामजू किये तथापि रामजूको कर्तव्यता श्रीलक्ष्मणजूते भिन्ननहीं है तथा जनकपुरमो धन्वातोरबे के समय में जब सब राजा हारिगये तब जनकजू निराश होकरिदुखी होतभयेतेहि समयमेंअपने प्रभावकों करि करिसुखी करतभये विश्वके कण्टकरूप जोकुटिल कोटिन्ह असुर ताकेनाश कर्त्ता वचनकोच्चय जो समूह ताके चातुरीकरि परशुधर जो परशुरामजू ताके गर्व के हरनेवाले सर्वकाल विषैं श्रीराम जू भद्रनाम कल्याणरूप ताके अनुगन्तानाम पीछेचलनेवाले सीतेश नाम सीताजूके स्वामी ताकी जो सेवा तेहि करिके सरस नाम सरस युक्त विष परसते निरस नाम रस रहित निरुपाधि नाम कामना रहित धुरनाम बोझा धर्मको धारणकिये बहुत जो बल ताके मूल अर्थात् बलके आधार सार्दूलनाम सिंहसमान विक्रम जाको जलदनाद नाम मेघनादताके नाशकलंकाको संग्राम सोई भयकरनेवालो समुद्रभयोंताकोंतरननामपारहोनेवाले श्रीरामजूके हितके अर्थ करणनाम कियोहै श्रेष्ठ अपने भुजाको सेतुनाम बांध-जाने अर्थात् मेघनादको वधकरि लंकाके संग्रामरूपो समुद्र विषै वानर भालुके सेनकों पारकियो है अन्यत स्पष्टहै॥ ३८॥•

सू०। जयतिभूमिजारमणपदकञ्ज मकरन्दरसरसिक मधुकर भरत
भूरिभागी। भुवनभूषणभानुवंशभूषण भूमिपालमणिराम
चन्द्रानुरागी। जयतिविबुधेशधनदादिदुर्लभमहाराजसंभ्राज
सुखपदविरागी। खड्गधारावती प्रथमरेखा प्रकटशुद्ध मति

युवतिपतिप्रेमपागो। जयतिनिरुपाधिभक्तिभावयंत्रितहृदय बन्धुहितचित्रकूटाद्रिचारी। पादुकान्टपसचिवपुहुमिपालक परमधर्मधुरधीरबरबीरभारी। जयतिसंजीविनीसमयसंकट हनूमान धनवान महिमाबखानी। बाहुबलविपुलपरमित पराक्रम अतुलगूढगतिजानकीजानजानी। जयतिरणअजिर गन्धर्वगणगर्व हरफेरिकियेरामगुणगायगाता। कागडवो· चित्तचातकनवाम्बुदबरणशरणतुलसीदासअभयदाता॥३९॥

टी० भूमिजा जो श्रीजानकीजू तेहिविषैं रमण करता जो श्री रामजूताकेजो चरणकमलविषैं अनुराग रूपीरसतेहिरसके रसिक भ्रमररूपऐसेजोश्रीभरतजी समूहहैं भाग्यजाकेसो जययुक्त होहिं समस्त भुवनके भूषण रूप तथा सूर्य्यवंशके भूषण जितने राजागण तामें मणिरूप ऐसे जो श्रीरघुवर तेहिके अनुरागी इंद्रकुबेरादि ताको अत्यन्त दुर्लभजो चक्रवर्त्तीको राज्य सुख तेहि पदतें विराग जाको अर्थात् जेहि ऐश्वर्य्य कों इन्द्रादिक ललचत् हैं तवने ऐश्वर्य्य को नरकसमान दुखरूप निश्चयकरि मलवत् त्यागकरत भये खड्ग धारसमान व्रत जाके ऐसे जो ब्रह्मऋषि राजऋषि ताके मध्यमें पहिली रेखाहै प्रगटजाकी अर्थात् संसार त्यागरूप जो तरवारको धारसदृश व्रत जेहिमहात्मनकेतामें पहिलेगिनतीजाकी शुद्धबुद्धि रूपी जो स्त्री सो अपनेपति जोश्रीरामजू ताके प्रेममेंपगीहै अर्थात् श्रीभरतजी की बुद्धिरूपी स्त्री जितनी पतिव्रता विदित हैं तेहिके मध्यमें सींवारूप निरुपानिष्काम जो भक्ति तेहिकाभाव जो प्रीति तेहिकरिके यंत्रित नाम वशीभूत भयोहै हृदयजाको बन्धुहितनाम श्रीरामजी के दर्शनके अर्थ चित्रकूट जो अद्रिनाम पर्वत तेहिपर चलनेवाले श्रीरघुबर के आज्ञाकरि चित्रकूटते अयोध्याविषैं आय करि स्वामीकी पादुका जो खराऊं ताको राजाकरि के मंत्री ह्वै करि पृथ्वीको पालन करत भये· तथा परमधर्म जो भागवत धर्म ताको धुर जो बोझा तेहिके धारण करबे में अत्यन्त धीर तथा भारी जो बीर सब तामें श्रेष्ठ बीरन्हमें श्रेष्ठ कहे ताको देखा· वत हैं लक्ष्मणजू के शक्ति छुड़ाइबे को संजीवनी जड़ी के निमित्त पर्वतलिये महाबीर आवते रहे ताहि समय संकट नाम अत्यन्त क्लेश के समय अर्थात् श्रीरामजी के विरह करि छूटगो है सर्वभोग जाको अत्यन्त दुर्बल शरीर तेहि समय में सींक को बाण मारत

भयेजाके धन्वाबाण के महिमा को श्रीमहावीर प्रशंसा करत भये ताके भुजाके बलकों बड़ी है परमित नाम प्रमाण तथा पराक्रम अतुल नाम वे तोल अर्थात् जो बुद्धिसों न आवे गूढ़ गति नाम हृदय को गुप्त जो अभिप्राय ताको केवल जानकी जानन नाम श्रीरामजू जानें अन्य जो जनकादि ताहूके बुद्धितें अगम्य है हृदय जाको श्रीरघुवर आज्ञातें विजय करवेको गये हैं तहां रण अजिर नाम संग्राम अंगन में गन्धर्व के समूह कों अपने बल करि तेह सबके गर्वको दूरि करत भये पूर्व तीन गन्धर्व सब अपने बल ऐश्वर्यका गर्वतें श्रीरामजूतें विमुखभये रहे तेहि सबको फेरिनाम फेरि करि रघुवर गुणको जो गाथा ताको गातानाम गावने वाले किये नामकरत भये मांडवीजू भरतजूको जो ताके चित्त जो पपीहा रूप ताके नवीन जो अंबुद नाम मेघ तैसो है वर्ण जाको अर्थात् स्वाती को मेघरूप तथा शरण को प्राप्त जो तुलसी ताकों निर्भय करनेवाले ऐसे जो श्रीभरतजू सो जयको प्राप्त होहिं ॥ ३९ ॥

मू० । जयतिजयशत्रुकरि केशरीशत्रुहन शत्रुतमतुहिनहरकिरण
केतू । देवमहिदेवमहिधेनु सेवकसुजन सिद्धमुनिसकल क-
ल्याणहेतू । जयतिसर्वाङ्गसुन्दर सुमित्रासुअनभुवनविख्यात
भरतानुगामी । वर्मचर्मासिधनुबाण तूणीरधरशत्रु सङ्कट
शमन यत्प्रणामी । जयतिलवणांबुनिधि कुम्भसम्भवमहा-
दनुजदुर्जनदवनदुरितहारी । लक्ष्मणानुज भरत रामसीता
चरणरेणुभूषितभाल तिलकधारी । जयतिश्रुतिकीर्त्तिवल्लभ
सुदुर्लभसुलभनमतनर्मदभक्तभक्तिदाता । दासतुलसीचरण
शरण सीदतविभो पाहिदीनार्त्तसन्तापहाता ॥ ४० ॥

टी० । शत्रुरूपी जो हाथी ताके नाशकरवे को सिंहरूप यह हेतुतें शत्रुहन है नाम जाको शत्रुरूपीअन्धकार तथा तुहिननाम पालाके नाशकरवेको किरणकेतूनाम सूर्यरूपदेवतातथामहिदेव नाम ब्राह्मण महि जो पृथ्वी धेनुजो गाय सेवक जो भक्तसुजन नाम सज्जन अर्थात् वेदविहित कर्म करता सिद्ध नाम अष्टसिद्धि प्राप्त जाकों मुनि जो मनन शील यह सबते कल्याणके हेतु बखतर आदिकों धारणकिये शत्रुकृत जो सङ्कटताकों शमन करत हैं यत्प्रणामी नाम जो शत्रुहनजूकों प्रणाम करतहैं लवण जोअसुर सोई अंबुनिधि नामसमुद्रभयोताके नाशकरवेकों कुम्भसम्भवनाम

अगस्त्य लक्ष्मणजके अनुजनाम छोटेभाई भरतजू श्रीराम जानकी जूके चरणके धूली को धारणकिये हैं तिलक तेहकरि भूषित है नाम सोभितहै ललाट जाको श्रुति कीर्तिजूके बल्लभनाम स्वामी बिमुखन्हकों सुनामअत्यन्तदुर्लभ सन्मुखजीवन्हको सुलभ नमस्कार करत जो जन ताकों नर्मद नाम सुखके दाता भक्तन्ह कों भक्ति के देनेवाले तुलसीदास चरणके शरण होकरि सीदंति नामदुख पावतहै ताकोंहै विभो पालनकरो दीनताकरि आरतजो जीवताके संतापके नाशकर्त्ता ऐसे जो आपतेहकी जयहोय ॥ ४० ॥

मू०। कबहुंकअम्बअवसरपाय। मेरियैसुधिद्याइबीकछुकरुणाकथा चलाय। दीनसबअङ्गहीनछीणमलीनअघीअघाय। नामलै भरौउदरएकप्रभुदासीदासकहाय। बूझिहैसोहैकौनकहि- बेनामदशाजनाय। सुनतरामकृपालके मेरीबिगरिऔबनि- जाय। जानकीजगजननिजनकीकियेबचनसहाय। तरैतुल- सीदासभवतवनाथगुणगणगाय ॥ ४१ ॥

टी०। हेअम्ब काहूकालमो समयपाय अर्थात् श्रीरघुवरकोरुख बूझिकरि मेरीजोसुधि दिलवानीपरं कछुकरुणा की कथा चलाय करि अर्थात् दीनजीवन्हके ऊपर रघुवर को जो कृपालुताते यह प्रसङ्गको काढ़िकरि केहिरीतितें कहनोसो कहतहैं एककोई दीन जीवसब अङ्गहीननाम सर्वसाधनकरिहीन छीणनाम दुखकरि दु- र्बल मलीन नाम अन्तष्करणतें मलान अघी जो पापीसब तेहिके मध्यमो अघाय नाम भरिपेटपापकियौ है ऐसोजो एक जीव सो आपको नामलैकरि पेट पालनकरत है प्रभुको जो दासी तुलसी ताको दासकहाय करि एतनो सुनि जब श्रीरामजू पूछेंसो कवन है तब मेरोनाम औदशा जनायकरि आपकहियो चेतऐसो संदेह करोकि हमकहे स्वामी तुम्हारीखबरि नलियेतौ मेरो बचनव्यर्थ भयो सो नहीं काहेकि रामजू जो कृपालुताके केवलश्रवण करत मात्रतें मेरी सबबिगड़ी जो बातसो बनिजायगी हेजगजननि जन जो मैं ताकेअर्थ बचनमात्र सहायकिये तुलसीदास संसारते पार होतहै तुम्हारेस्वामीको गुणसमूहगायकरि अर्थात् आपके स्वामी को यश संसारमो बिदित होयगो औ तुलसी को कल्याण होतहै बचन मात्रके सहायतें ॥ ४१ ॥

मू०। कबहुंसमयसुधिद्यायबोमेरी मातुजानकी। जनकहायनाम

लेतहैं।पनचातकज्यौंप्यासप्रेम पानकी। सरलप्रकृति आप जानियेकरुणानिधानकी। निजगुणअरिकृतअनहितोदास दोषसुरतिचितरहतनदियेदानकी। बानिबिसारणशीलहै मानदअमानकी। तुलसिदास न बिसारिये मनक्रम बचन जाकेसपनेहुंगति नहिं आनकी ॥ ४२ ॥

टी० पूर्व बिनय को बिचार करि कबहुं समयपाय मेरी सुधि दिलावनी हे मातु जानकी दास कहायकरिनाम लेतहैं। प्रतिज्ञा करिके पपीहा जैसे स्वाती के जलकों पिपासित होकरि चाहै है तैसे मोकों सुन्दर जोरघुबर चरण विषयक प्रेम ताके पानकरबे कों पियासलागीहै चेतआपकों सन्देहहोय कि स्वामीतें तुम्हारी वार्त्ताकही औ स्वामी सुनिकरि खफाहोंय कि ऐसेमन्द जीवन्हकी बातक्यौं चलावतिहै सो ऐसी चिन्ता आपचित्तमो मति ल्यायौ काहे कि मेरे स्वामी कृपाके पात्र ताकी प्रकृति जो स्वभाव सो सरलनाम कोमल आपभली प्रकार जानो हो तथा स्वामी मो स्वाभाविक जो गुणसो आपतें अधिककौन जानेगो तेहगुण कों देखावतहैं कि रघुबर विषैं इतने गुणहैं शत्रुको कियो अनहित तथा देत हैं जो दानमो सुरति नाम यादि चित्तमो न रहत है पूर्वोक्त चारों बातन्ह को बिसारणशील बाणि नाम स्वभाव है जाको तथा मानद अमानको नाम जेह जीवको कहीं सनमान नहोयं ताहूकों मानके देनेवाले ऐसे कृपाल जोमेरे स्वामी तासों हो माता ऐसी कहियो कि तुलसी कों न बिसारिये काहे कि मनवचन कर्मकरि जाकों तुम्हे छोड़ि स्वप्नऊ मो और की गति नहीं है ॥ ४२ ॥

मू०। जयतिसदसत्चितव्यापकानन्दपद ब्रह्मविग्रहव्यक्त लीलाव-
तारी। बिकलब्रह्मादिसुरसिद्धसंकोचवस बिमलगुणगेहनर
देहधारी। जयति कोशलाधीशकल्याण कोशलसुता कुशल
कैवल्यफलचारुचारी। वेदबोधितकर्मधर्मधरणीधेनुबिप्रसेव-
कसाधुमोदकारी। जयतिऋषिमखपालशमनसज्जनसालशा
पवससुनिवधूपापहारी। भंजिभवचापदलिदापभूपावलीसहि-
तभृगुनाथनतमाथभारी। जयतिधार्मिकधुरधीररघुबीरगुरु
मातुपितु बन्धुवचनानुसारी। चित्रकूटाद्रिबिंध्याद्रि दण्डका
विपिनधन्यकृतपुण्यकाननबिहारी। जयतिपाकारिसुतकाक

कारतूति फलदानि खनिगर्तगोपितविराधा। दिव्यदेवीबेष
देखिलखिनिशिचरीजनुविडंबितकरी विश्वबाधा। जयतिखर
त्रिशरदूषणचतुर्दशसहस्रसुभटमारीचसंहारकर्त्ता। गृध्रशव-
रीभक्तिविवशकरुणासिन्धुचरितनिरुपाधित्रिविधाधिहर्त्ता।
जयतिमदअन्धकुकबन्धवधि बालिबलशालिवध करणसुग्रीव
राजा। सुभटमर्कटभालुकटकसंघटसजतनमतपदरावणानुज
निवाजा। जयतिपाथोधिकृतसेतुकौतुकहेतुकालमनअगम
लईललकिलंका। सकुलसानुजदलदलित दशकण्ठरणलोक
लोकपकियेरहितशंका। जयतिसौमित्रिसीतासचिवसहित
चलेपुष्पकारूढ़निजराजधानी। दासतुलसीमुदितअवधवासी
सकलरामभयेभूपवैदेहिरानी॥ ४३॥

टी०। इहां पर्य्यन्त श्रीरामजू के अंगरूपजो श्रीगणेशादिअन्त श्री जनकनन्दिनी महारानी प्रतिप्रार्थनाकरि अब श्री स्वामीकों स्मरण करेहैं सत् असत् स्वरूप आपहीहो चैतन्य व्यापक आनन्द रूप जो ब्रह्म सोई है विग्रहनाम शरीरजाको प्रकटभये लीला के अर्थ अवतार ग्रहणकरि अवतार होवेकों हेतु कहत हैं ब्रह्मादि की व्याकुलता देखि विनयको श्रवणकरि शीलवान जो स्वभावतेह हेतुतें संकोचके वशहोकरि निर्मलगुणको गृह जो मनुष्यको देह ताकों धारण करतभये कोशलाधीश जो महाराजा श्रीदशरथजू कल्याणमूर्ति तथा कोशलसुता जो श्री कौशल्याजू कुशलनामअति प्रवीण तेहनिमित्तकरि कैवल्यजो मोक्षफलचारुनाम सुन्दर चारि नाम सामीप्यसालोक्य सायुज्य सारूप्यतद्रूप जो चारोंभातासो आविर्भाव होतभये प्रकटहोकरि जो कार्य्यकिये सो अगिले तुकतें जनावत हैं भृगुनाथ जो परशुरामजू तेह सहित भारी है माथ अर्थात् अपने बलवीर्यकरि अभिमानी जो समताकों नतनामनमित करतभये अन्यत स्पष्टहै धर्मोंके नाम धर्ममूर्ति जो सब ताको जो धुरनाम बोझा ताको धारणकरनेमें अतिधीर चित्रकूट अद्रिनाम पर्वतविंध्यापर्वततथा दण्डकवनको धन्यकरतापाकरि सुतजोजयन्त काकरूपकीजो करनी ताके फलके दाननाम दाता खनिगर्तनाम गड़हाकों खनिकरिगोपितनामगुप्तकियोहै अर्थातगाड़ोहै विराध नाम असुरको जानेदिव्य देवीको वेषकियेजो सूर्पनखाताकों देखि लखिनामपहिचानिकरि राक्षसीकैसो रूपकियेहै किजैसे सर्वलोक

को बिडंबनाकारी है समस्तविश्वको बाधानामपीड़ाके अर्थ अर्थात् श्रीरघुवर रूपकों देखिकरि जौंलोभी होहिं तौ धर्मके नामतें श्री रामजूविषैं सर्वलोकको निवासहै तेहहेतुतें सब ब्रह्माण्डको पीड़ा होय यहभावहै ऐसीजो सूर्पनखा ताको विरूपकरि देतभये यह ऊपरतें अध्याहारहै चरित निरुपाधि नाम जोचरितमो सज्जनन्ह कों कोउ उपाधिनहीं अर्थात् पीड़ानहीं तथात्रिविधि नाम अध्यात्म अधिभूत अधिदैव हत आधिनाम पीड़ा ताके हर्त्ता सुभट जो बानर भालुताके फौजकों संघट नाम यूथ ताको साजते अर्थात् विभाग करते तेह समयमो चरणको प्रणाम करत जो विभीषण ताको निवाजतभये अर्थात् राज्य देकरि यहलोकतें अभय करत भयेभक्ति दैकरि परलोककी चिन्ता दूरकिये यहपदविषैं रामा-यणकों जोलीला ताकों सूचीकरि कहे शब्दार्थ स्पष्ट है ४६ ॥

मू०। जयतिराजराजेन्द्र राजीवलोचनरामनामकलिकामतरुश्यामशाली। अनयअंभोधिकुम्भजनिशाचरनिकरतिमिरघनघोर खरकिरणमाली। जयतिदेवमुनिदेव नरदेवदशरथकेदेवमुनि वंद्यकियअवधवासी। लोकनायककोकशोकसंकटशमनभानु कुलकमलकाननविकासी। जयतिशृंगाररसतामरसदाम द्युतिदेहगुणगेहविश्वोपकारी। सकलसौभाग्यसौंदर्यसुखमा रूपमनोभवकोटिगर्वापहारी। जयतिशुभगसारंगसुनिखंग सायकशक्तिचारुचर्मासिवरवर्मधारी। धर्मधुरधीररघुवीर भुजबलअतुलहेलयादलितभूभारभारी। जयतिकलधौतमणि मुकुटकुण्डलतिलकझलकभलिभालविधुवदनशोभा। दिव्यभूष-णवसनपीतउपवीतकियेध्यानकल्याणभाजननकोभा। जयति भरतसौमित्रिशत्रुघ्नसेवितसुमुखसचिवसेवकसुखदसर्वदाता। अधमआरतदीनपतितपातकपीन सकृतनतमात्रकहिपाहि पाता। जयतिभुवनदशचारिजसजगमगतपुण्यमयधन्यजय रामराजा। चरितसुरसरितकविमुख्यगिरिनिःसरितपिबत मज्जतमुदितसंतसमाजा। जयतिवर्णाश्रमाचारपरनारिनर सत्त्वशमदमदयादानशीला। विगतदुखदोषसंतोषसुखसर्वदा सुनतगावतरामराजलीला। जयतिवैराग्यविज्ञानवारांनिधेन मतनर्मदपापतापहर्त्ता। दासतुलसीचरणशरणसंशयहरण देहिअवलंबवैदेहिभर्त्ता ॥ ४४ ॥

टी०। नामजाकोकलिमें कल्पवृक्ष रूपश्याम शालीनाम श्याम वर्णतेंसोभितश्रीरामनामको पाठहै।यते राजनीतिमें सामदाम दंडविभेदकहेहैं तहांसामनाम मिलापसो इहांरामशब्दतें चारों कोग्रहणभयो अर्थात् सामदामादि जोराजनीति तेहकरिशोभन शोलअनयजोअनीतिसोईसमुद्रभयोताके नाशकरबेकों कुंभजनाम अगस्त्यरूपअसुरन्हके निकर जोसमूह सोई तिमिरनाम अंधकार घननामनिबिड़घोर नामभयानक भयेताकेनाश करबेकोंखरनाम तीक्ष्णकिरणकी मालाजेहकों अर्थात् दोपहरके सूर्यरूपमुनिन्ह के देवता तथानरदेव जोराजासबताके देव अर्थात् पूज्यऐसोको सो कहतहैंदशरथके पुत्र,पुत्रपदकोंडपरतेंयेजानाहै जोरघुबरदेवता मुनिन्हकरि बंद्यनाम बंदनकरबे योग्य किये अयोध्या बासिन्हकों लोकनायक जो इन्द्रादि सो भये कोकनाम चक्रवाक तेहकेशोक घोर संकटके शमन करबेकों सूर्यरूप सूर्यबंश कमलवनभयों ताकों विकास करनेवाले नवरसमें मुख्यजोशृंगार रस सोईसर नाम सरोवर तेहविषैं उत्पन्न तामरस जोकमल ताको दामजोगुच्छा तैसोद्युति है देह विषैं समस्त गुणके गृह विश्व के उपकार कर्त्ता सकलजोसौभाग्यसौंदर्यजो सामान्यसुन्दरता सुखमापरमाशोभा ताकेरूप नाममूर्त्ति अपनेशोभाकरि मानोभयजोकामदेवकोटिन्ह ताकेगर्वके अपहारी नाम दूरकर्त्ता सारंगनाम धन्वानिषंगनाम ताकारकरवयानाम निरादर करिकेदलनकियेहै पृथ्वीकेभाररूप जोभारी असुरसमूहजधैात जोसेनातथाअनेक मणिकरिमुकुटादि जोभूषणादि तेहयुक्त जोस्वरूप को ध्यानतेहके कियेते कल्याणको पात्रकोनभा अर्थात् जोध्यान कियेसे कल्याणके मूर्तिभये तानों भाइन्हतें चरितसुमुख नामसर्वदाप्रसन्नहै मुखजाको अधमजो वेद के मर्य्यादकों उल्लंघनकिये आर्तदीन को अर्थ पूर्वलिखि आये हैं पतितजो पातक करिपीन नाममोटा अर्थात् पाप मूर्ति ऐसे जो जीवतिन्हकरत नामएकवेरनत नामनमस्कार मात्र करत हैं रघुबर पाहि ऐसोकहै ताकोंपाता नाम रक्षाके कर्त्तापुण्यमय नामपुण्य स्वरूपहै यशजाको चरित श्रीगंगातुल्य सोगंगाजू पर्वततें निकली हैं इहां कविन्हको जोसुखनाम मुह सोई पर्वतभये तेहतें चरित रूपी गंगा निकली हैं औ मुख्यपाठ होय तो मुख्यनाम श्रेष्ठ जो कवि सोई पर्वतरूपहै जेहरामजी के राज्यविषैं चारोंवरण चारों

आश्रम अपने आचारविषैंपरनामतत्पर हैं नरनारि पदतें चारि वर्णतें अन्य जो स्त्री पुरुष सोऊ सत्य समनाम अन्तःकरण मनइंद्रिया दि निग्रह दमनाम बाह्य श्रोत्रचक्षु आदिनिग्रह दयानाम काय मनो वचन तें जीवमात्रको पीड़ा नकरने दान जो अन्नादि यह सब गुणको शील नाम स्वभाव है जेह प्रजन्हको संपूर्ण दोषनाम पापादिक दुख जो रोगादिक सो विगतनाम विशेष करिकै नष्ट है जेहतें संतोषनाम जेतनो लाभ तेतने करिसंतुष्टसुख जोकायमनो वचनकरि आनन्द ताकी है संपति जेह प्रजन्हकों केह साधनतें ऐसी सिद्धिभई सो कहतहैं सर्वकालमो सुनतेहैं गावतेहैं रामजू के राज्यके लीलाकों जो सब वैराग्य औा विज्ञान के निवासकरवे कों वारांनिधि नाम समुद्र नमतनाम नमस्कार करत जो जीव ताकों नर्मदनाम सुखके दाता अन्यत स्पष्ट है ॥ ४४ ॥

मू०। श्रीरामचन्द्रकृपालभजुमन हरणभवभयदारुणं। नवकंजलो-
चनकंजमुखकरकंजपदकंजारुणं। कन्दर्पअगणितअमितछवि
नवनीलनीरजसुन्दरं।पटपीतमानहुँतड़ितरुचि शुचिनैामि
जनकसुतावरं। भजुदीनबंधुदिनेशदानवदैत्यवंश निकंदनं।
रघुनंदआनंदकंदकोशलचन्ददशरथनंदनं।सिरमुकुटकुण्डल
तिलक चारुउदार अङ्गविभूषणं। आजानुभुज शरचापधर
संग्रामजितखरदूषणं।इतिवदततुलसीदासशंकरशेषमुनिमन
रंजनं।ममहृदयकंजनिवासकरिकामादिखलदलगंजनं ४५॥

टी० मनतें उपदेश करतहैं की श्रीरघुवर को भजु कैसेहैं श्री रामजू नवीनकमल समान नेत्रजाके अर्थात् कमलकों गुणशीतल करवेको है सोजड़जीवन्हकों देखवेकी सामग्री नहीं तेहजीवन्हके मध्यमो जाको श्री रघुवर देखैंताकों त्रैताप निवृत्तिकरि शीतल करत हैं कमल समान मुखजाको अर्थात् नेत्रवानजीव जोवा मुख कमलकों देखैसोपापकृतदुखको जो तापतेहतें रहितहोकरिशीतल होतहैं कमल सदृशहस्त अर्थात् जेहजीवकों हस्तकमल को स्पर्श भयो सोनरकादिको जोतापतेहतें छूटिकरिकै सुखीहोतहै कमल समानचरण अर्थात् जोजीव ध्यानकरत हैं सोकायमनो वाक्यतें शीतलहोतहैं असंख्य कामदेवतें वेप्रमाणहै छबिजाकी नवीन जो श्याम कमल तैसो है सुन्दर शरीर इहां श्यामकमल को उपमा चिक्कनता तथा प्रकाश गुण लैकरि दिये श्याम वरण को यह हेतु

है कि सब रङ्गके ऊपर श्यामरङ्ग चढ़ंत है पर श्यामरंग के ऊपर
दूसरो रंग नहीं चढ़ंत अर्थात् संसार को अनेक कामना रूप
जो नानारंग तेहिको छिपायकरि भगवत रंगपक्का सोहंतहै पर
भगवत रंग के ऊपर दूसरो संसारी रंग कच्चानहीं चढ़तहै यह
भावहै पीताम्बरविषैं मानों बिजुलीकी रुचिनामदीप्तिशुचि नाम
पवित्र आजानुभुज नामटेहुनेके नीचेतक भुजाजाको अन्यत स्पष्ट
है ऐसन रामजूकोजपु बारबारजपु मदहियेसोअति आदरतथा
निश्चयकेअर्थ मदनाम तेहिके नामकोकछु कैसो नामहैवेद कोसार
भूत अयोध्याकेइंदुनाम राजानवीन जोश्यामकमलताकी आभा
जोदीप्तिसोहै शरीरविषैं मदनरिपु जोशिवजू ताके हृदय कमल
तामें चंचरीकनाम भ्रमररूपविहारकर्त्ता कारुणीकनाम समूह
करुणाकेरूप दनुज जोदैत्यसोई भयेबनताके जलाइबे को धूम-
ध्वजनाम धूमशिखाविषैं जाकेअर्थात् अग्निरूपपाननामसोटा तथा
लम्बाजोभुजदण्डतासो कोदण्डनामधन्वा तथाप्रचण्डजोबाणताको
धारणकिये अरुणजो बालराजीवनाम कमलतैसोहै हाथ चरण
मुखनेत्रजाके समस्त गुणके गृहबहुत जो कामदेवता के शोभा के
हरबेको पापवासना जोसंसारवासनाहै दृढजोसमूह सोभयो कैरव
नाम कुईं गणताकेसंपुट तथा नाशकरबेको सूर्यरूप काम जोपर
स्त्रीचेष्टा क्रोध जो गुणवान ब्राह्मण साधुदीन जीवन्ह विषैं उत्कट
बचनादि क्रिया मदनाम शरीर बलऐश्वर्यादिकरि जोगर्व सोसब
भयो कमलको कानन नाम बनताके नाश करबेको तुखार नाम
पालारूप लोभ जोपर द्रव्यादिविषैं अभिलाष सोईभयो उन्मत्त
नागेन्द्रनाम हाथी ताके नाशकरबेको पंचाननंनाम सिंहरूप भा-
ष्याणके अर्थसंसार के भारदूरकर्त्ता केशवनाम जाको केशहंनाम
क्लेशके नाशक केशनामक जोब्रह्मा ईश जो शिवतेहिकरि वन्दित
हैं दोऊचरण जाके मन्दाकिनी जो श्री गंगाजू ताके मूल भूत
अर्थात् उत्पत्ति स्थान सर्वदा जो आनन्द ताके सन्दोह नामपरि
पूर्णपात्रमोहके अपहंनाम नाशकभयानक जो संसाररूपी समुद्र
ताकेपोतंनाम जहाज शोकनाम प्रियवस्तुके नाशसो जोखेद स-
न्देहनाम निश्चय नहींहोनोसोई पाथोद जोमेघपटल नामसमूह
ताके दूर करबे को श्वसनं नाम वायु रूप पाप रूपी जो पर्वत
कठिन ताको वज्ररूप सज्जन को कामधुक नाम कामधेनु रूप

विश्रामदाता नामआको कलिकालको कलुषजो पापताके भञ्जन कर्त्ता अनूपं नाम उपमा रहित धर्मरूपी जो कल्पद्रुमताके हरवे को आराम नामवाटिकारूप भगवत धामको जो मार्गताके जाने वालेको संवलंनाम कलेवा तथा भगवानके प्राप्तके साधनको मूलं नाम आधार इदंनाम यह जो रामनाम एवंनाम निश्चयकरिके एकंनाम मुख्यभक्ति आदिजो साधनसो नामके आधीन है अर्थात् नामके अवलम्बतें सबसाधनको उदय होतहै तेननाम तेहि पुरुषने तप्तंनाम सर्वतपस्या कियो तथा तेहने दत्तनाम दानदियोएवनाम निश्चय अखिलंसमस्त पृथ्वी तथा ताने सर्वजो कर्म जालंनाम यज्ञ समूहताको हुतंनाम कियो केहनेकियो ताको कहतहैं जेन नाम जेहपुरुषने श्रीरामनामरूपी अमृतपानकियो अनिशंनाम निरन्तर कैसोहै नामरूपी अमृत अनवद्यंनाम सबदूषणतें रहितयह कलिकालकों अवलोकनकरिके अर्थात् यह जो मलीन कलिकाल तामें नामत्यागकरि कल्याणको दूसरो उपायनहीं यह विचार करि नामावलंब कस्यो सो सर्व साधन करिचुक्यौस्वपचादिभगवन् नाम केवलकरि भगवतधामको प्राप्तभये कैसे हैं स्वपचादिविपुल नाम बहुत जो मलानता तेहकरिके मतिको बुद्धिसापरसी नाम स्पर्शभई है जेह सबकी अर्थात् ऐसऊपापरूप जीवन्ह कों भगवत धामकों प्राप्तभये कैसेहैं स्वपचादि बिपुलनाम बहुतजो मलीनता तेहकरिके मतिजो बुद्धिसोपरसीनाम स्पर्शभईहै जेहसबकीअर्थात् ऐसऊ पापरूप जीवन्हकों भगवत धामको दातायह बिचारकरि सबसाधनको आसातथा संत्रासनामनरकादिको जो अति त्रास ताकौं त्यागिकरि संसारको जो पासनाम बन्धन ताके काटवेकों असिनाम तरवाररूप निसितनामचोखि। ऐसोजो हरिनामताको हेतुलसी तूं निरन्तर जपत रहु यह अर्थ है॥ ४५॥

मू०। ऐसीआरतीरामरघुवीरकी करहिमन। हरणदुखद्वंद गोविन्दआनन्दघन। अचरचररूप हरिसर्वगतसर्वदाबसतइति वासनाधूपदीजै। दीपनिजबोधगत क्रोधमदमोहतमप्रौढ़ अभिमान चितवृत्तिछीजै। भावअतिशयविशदप्रवरनैवेद्यशुभ श्रीरमण परमसंतोषकारी। प्रेमतांबूलगतशूलसंशयसकल विपुलभववासना बीजहारी। अशुभशुभकर्म घृतपूर्णदशवर्तिका त्यागपावक सतोगुणप्रकाशं। भक्तिवैराग्यविज्ञान

दीपावलीअर्पिनी राजनंजगनिवासं। विमलहृदिभवनकृत शांतिपर्यङ्कशुभसयनविश्रामश्रीरामराया। क्षमाकरुणाप्रभु खतंत्रपरिचारिकायत्र हरितत्रनहिं भेदमाया। एहिआ-रतीनिरतसनकादिश्रुतिशेषशिवदेवऋषिअखिलमुनितत्वद-रसी। करैसोइतरैपरिहरै कामादिमलवदतइति अमल मतिदास तुलसी॥ ४६॥

टी०। हेमन ऐसी आरती रामजूकी करुजोआरती दुखको कायिका वाचिकामानसिक इंइनामशीतउष्णादिताको हरणकरे अर्थात् शरीराभिमान को नाशकरै कैसेरामजू हैं गोविन्द नाम सब इन्द्रिन्हके ज्ञाता निविड़ आनन्दके मूर्त्ति अब आरती को स्व-रूपकहतहैं अचर जो जड़चरचलने वाले जंगमजीव तद्रूपजोहरि तथा सर्वभूत विषेगत नामप्राप्तहोकरि सर्वकाल में।वसतहै इति नाम यहजो दृष्टिसोई वासनानाम सुगन्धधूपदेनो।धूपके आगेंदीप चढ़िये सो निजबोध नामस्वरूप ज्ञान जामें नष्टभयो है क्रोधमद मोह दीपतें अन्धकार दूरहोतहै सो यहां प्रौढ़जो अभिमानतेह युक्तजोचित्तकीवृत्ति अर्थात्त्यहिस्त्री पुत्रधनादिविषैं अभिमानको लैकरिचित्तकी वृत्तिस्थित होतिहै सोई अन्धकाररूपभई सो बोध रूपदीपकरि छीजैनामनाश होतिहै दीपकेआगे नैवेद्य चढ़िये सोभावजोपूर्व अवस्थाको सामान्य अनुराग सोई अतिशयविदित नाम निर्मल प्रवरनामश्रेष्ठ नैवेद्यशुभ नाममङ्गलरूप अर्थात् पवित्र सो श्रीरमणजो श्री जानकीनाथ ताकेपरम सन्तोषको करैहैंअब ताम्बूलचढ़िये सो प्रौढ़जो प्रेमजाविषैं नष्टभयो दैहिक दैविकभव-तिक शूलतथा सकल संशय नाम यह कर्त्तव्यतातें अपनो कल्याण होयगो अथवा न होयगो सो नष्टभयो है जेह प्रेमविषें सो प्रेम ताम्बूल बोटिकाभयो ताम्बूलकरिके मुखको दुर्गन्धादि छूटत है यह ताम्बूल करिके बहुत जो संसार की वासना ताको जीवजो मनको संकल्प विकल्प तेहको हरणकरै है इहां नैवेद्य ताम्बूलजो सामग्री सो कर्त्ता के अर्थ है काहेकि परमेश्वर पूर्णाभिलाष हैं नैवेद्य खानेकी भूख नहीं लगीहै तथा मुखको वासना हरणकरनो परमेश्वर विषैकहनो नहीं बनै है यह हेतुते परमेश्वर को सम-र्पणकरि जो आश्वादन करत हैं ताको यह नैवेद्य ताम्बूलादि अपनो गुणदेत हैं यहभाव है तांबूल के आगे आरती चढ़िये सो

कहतहैंकि अशुभऔशुभ जो कर्मसोई भयोघी तेहकरिके पूर्ण जो दसबर्तिका नाम पांचज्ञानइन्द्री पांच कर्मइन्द्री अर्थात् जब घीते बत्तीपूर्ण होयहै तबजलैहै इहांअपने२ शुभ अशुभकर्मते पूर्णजोइन्द्री सोईदस बातीभईं सोबाती आरती करबेको जो पात्रतामेंजलैहै इहांपात्रको रूपकयद्यपि नकहेतथापि ध्वनिकरि फलितहोत है कि बातीको अधिष्ठान आरतीको पात्रहै इहां दशोंइन्द्री रूपजो बाती ताकोअधिष्ठान शरीरहै यहभावहै अग्निहोयतो बातीजलै सोसंसार सम्बन्धी जो विषयरूप रसगन्धादि ताको अन्तःकरणते जोत्याग सोईपावकनाम अग्निभयो तेहकरिके बत्तीप्रकाशितभई तो अब मन्दिरविषैं प्रकाशचाहिये सोशरीररूप जो मन्दिरतामें सतोगुणको जो उदय सोई प्रकाशरूप होत भयो अग्निके संयोग करि बत्तीऔ घीजलतहै सोइहां त्यागरूप अग्निकरि शुभ अशुभ कर्मको नाशहोत है तथा दशोंइन्द्रीकी जोवृत्ति सो परमेश्वरमें लयहोतहै सोईवाको जलनोभयो यहभाव है पूर्व आरतीकोपात्र शरीररूप करि कहे सो आरतीके पात्रविषैं जुदा २ घरहोत है जेहविषैं बत्ती भिन्न २ बरति है सो इहां बत्ती बरबे को घररूप भक्ति जो भगवानको भजन वैराग्य जोसंसारको नश्वर देखिबासो अरुचिहोनो इहां त्यागऔ वैराग्य दोऊकहे तासो यहअन्तर है कि प्रथम जब वैराग्य को स्वरूप आविर्भाव होतहै तेहके बलते पश्चात्त्याग होतहै अर्थात् त्याग जोगुण ताको आश्रय वैराग्य है तथाविज्ञाननामी अनुभव अर्थात् परमेश्वरते अपनेस्वरूपको भेद मिटानो यहीतीनों शरीररूप आरतीकों जो पात्रतेहविषैजुदा २ बत्तीजलबेको दीपकी अवलीनाम समूहभयो अर्थात् जो इन्द्रीरूप बत्ती विषय को आश्रय करि बरतिरही सोई अब भक्तिवैराग्य विज्ञान जो आरती के पात्रविषैं अनेकघर रूपतेह अधिष्ठान सो बिरतिभई ऐसी जोपूर्वोक्त नीराजननाम आरती ताको जगनिवासंनाम जगत के निवास को स्थानजो श्रीरघुवर तेहविषैं अर्पि नाम अर्पणकरिके औरकृपाकरे यह अर्थहै और कृपाकौन सो कहत हैं आरती किये पीछे शयन करावनो चाहिये सो पूर्वोक्त रीतिकरि निर्मल जो हृदय सोईभयो मन्दिर तेह हृदयविषैपूर्वोक्त साधनकरि उदय जो शान्तिगुण सोईभयो पर्यङ्कनाम पलङ्ग शुभ नाम मङ्गलरूपसुन्दर तेहके ऊपर शयनविश्राम कृतनाम कियोहै

श्रीराम जू राजा अर्थात् आरती किये पीछे हृदय रूपी मन्दिर शान्तिरूपी पलंगकेऊपर श्रीरामजूको शयनकरावेनो यह अर्थहै अर्थात् हृदयशान्तभये परमेश्वर स्थिरहोत हैं अन्यथानहीं महाराजन्हको जहांशयन होतहैतहां साहीगणरहति हैं इहांक्षमा करुणा प्रमुखनाम आदिलेकरि आदि पदतें अन्य जो महानगुण धीरता आदि को ग्रहण भयो सोई गुण सब परिचारिका नाम दासीगणभई यद्यपि यहां श्रीजनकनन्दिनी महाराणी को स्पष्ट नहीं कहे तथापिमङ्गलके रूपककरिमहाराणीके सहितशयनको बोध भयो यहां अपनी जो बुद्धि सोई महाराणी रूपभई तेहके सहित स्वामीशयन करतभये अर्थात् एकरूपहोत भये यह भाव है यह पूर्वोक्त रीतितें यत्रनाम जहांहरि जो श्रीरघुबर विराजमानभये तत्रनाम तहां नहीं है भेद अरु माया अर्थात् भेद जो परमेश्वर और हम और सोई परमेश्वरते अन्तरकरवे को माया नाम कपटहै ताको उदय फेर नहीं होत अर्थात् पूर्वोक्त आरती करनेवाले जीवकोस्वामीते अन्तरनहीं रहत यहभावहै अबअधिकारी जनावत हैं यह पूर्वोक्त जो आरती तेह विषैं निरत नाम तत्परसनकादिक स्रुतिजोवेद शेषनाग शिवजूदेव ऋषिजो नारद जु यह ते अन्य अखिल नाम सम्पूर्ण जो मुनि सब पर कौन मुनि तत्वदर्शीनाम भगवत तत्वके द्रष्टा चेतऐसो सन्देहहोयकि अबके जीवन्हको यह आरती विषैं अधिकार नहींहै तेहपर कहत हैं किजो कोई यह आरतीकोकरै सोई संसारते तरै नामपार होय तथा त्यागकरै कामादिमलकों बदतनाम कहतहैं इति नाम यह आरतीकों निर्मल मतिकरिके तुलसीदास अर्थात् अनेक पदन्हमों अपनेको मलिनमतिकहैहैं यहआरतीकेकथन मोजो कमलमतिन कहैंतो यह आरतीको वर्णनकरनो नहीं संभवेयह अर्थहै ४७॥

मू०। हरतिसवआरतीआरतीरामकी। दहतिदुखदोषनिर्मूलिनी कामकी। सुभगसौरभधूपदीपवरमालिका। उड़तअघविहग सुनितालकरतालिका। भक्तहृदिभवनअज्ञानतमहारिणी। विमलविज्ञानमयतेजविस्तारिणी। मोहमदकोहकलिकंज हिमजामिनी। मुक्तिकीदूतिका देहदुतिदामिनी। प्रणत जनकुमुदवनइंदुकरजालिका। तुलसिअभिमानमहिशेषबहु कालिका॥ ४८॥

टी०। पूर्वपदविषैं अन्तरांगभगवत पूजाको रूपककरि अन्तरांग जो आरतिसोकहेअबबाह्य आरतीको कहतहैं सब आरती जोक्लेश ताको श्रीरघुबरकी आरतीहरति नामदूर करतिहै दोष दुखकों जलावति है निर्मूलनी नाम जड़तें नाशकरने वाली सब संसारी कामनाकी सुन्दर सुगन्धजो धूपतथा श्रेष्ठजोदीप को समूह तेइ आरतीके कालमें करतालिका जोथपरी तालजोहै ताके शब्द सुनिकरि उड़तहैं पापरूपी पक्षी अर्थात् थपरीके शब्दतें जैसेपक्षी उड़तहैं तैसे आरतीविषैं करतालादि को शब्द सुनिपाप सब दूर होतहैं भक्तन्हके हृदयरूपी गृहको जो अज्ञानरूप अंधकार ताको नाश करनेवाली निर्मल विज्ञानरूपी जोतेज ताको विस्तार करने वाली मोहमद क्रोध कलिजो कलह सो भयो कमल तेहके नाश करबेको पालाकी राशीमुक्तिरूपी नायका के मिलाइबे कौंदूतिका रूपदेहकोदुतिजाकी बिजुलीसमान प्रणामकरत जो जनसबतेई कुमुदके बनभये ताकेबिकास करबेकों चन्द्रमा के किरणके समूह सदृशतुलसीको शरीरादि विषैं जो अभिमानसोई महिषेश नाम महिषासुर ताकेनाशकरबेकों·बहुत कालिकारूप ॥ ४८ ॥

मू०। देवदनुजबनदहनगुणगहनगोविंदनंदादि आनंददाताविनाशी। शंभुशिवरुद्र शंकरभयंकर भीमघोरतेंजायतन क्रोधराशी। नातभगवंतजगदंतअंतकत्रासशमनघोरमनभुवनाभिरामं। भूधराधीशजगदीशईशानविज्ञानघनज्ञानकल्याणधामं। वामनाव्यक्तपावनपरावरविभोप्रगटपरमातमा प्रकृतिस्वामी। चन्द्रशेखरशूलपानिहरअनघअज अमितअविछिन्नवृषभेषगामी। नीलजलदाभतनुश्याम बहुकामछबि रामराजीवलोचनकृपाला। कंबुकर्पूरवपुधवलनिर्मलमौलि जटासुरतटिनिसितसुमनमाला। बसनकिंजल्कधरचक्रसारंगधरकंजकौमोदकीअतिबिशाला। मारकरिमत्तमृगराजत्रयनयनहरनौमिअपहरणसंसारज्वाला। कृष्णकरुणाभवनदवनकालीयखल विपुलकंसादिनिर्वंशकारी। त्रिपुरमदभंगकरमत्तगजचर्मधरअंधकोरगग्रसनपन्नगारी। ब्रह्मव्यापकअकलसकलपरपरमहितज्ञानगोतीतगुणवृत्तिहर्त्ता। सिंधुसुतगर्वगिरिवज्रगौरीशभव दक्षमखअखिलविध्वंसकर्त्ता। भक्तिप्रियभक्तजनकामधुकधेनुहरि हरणदुर्घटविकटविपति

भारी । सुखदनर्मदवरद विरजअनवद्यखिलविपिनआनंद
वीथिन्हविहारी । रुचिरहरिसंकरीनाममंत्रावलीद्वंददुख
हरणिआनंदखानी । विष्णुशिवलोक सोपानसमसर्वदावदत
तुलसीदासविशदबानी ॥ ४९ ॥

टी० । यहपदकोनाम हरिशंकरीहै एकतुकमेभगवन्नामएक तुकमेशिव नामवर्णन करतहैं दनुजजो दैत्यसब सोई बनभये ताके जलाइबेकों दहननाम अग्निरूपी गुणगहन नाम निविड़ है गुण जासे।भीमनाम भयानक घोर नाम कठिन जो तेजताके आयतन नाम गृह क्रोधके राशिप्रलयकालसो। नांतनाम अनंतहै जाको जगत कोअंत जो नाशताकेकर्त्ता अंतकजो यमताके त्रासको शमन कर्त्ता लक्ष्मीविषे रमणकरनेवाले संपूर्ण भुवन विषैं अभिराम नाम सुन्दरभूधरजो कैलाशताके अधीशनाम स्वामी तथा जगत के ईश ईशानहै नामजाको घननाम निबिड़विज्ञानरूप ज्ञानऔ कल्याण के गृहवामन रूप होकरि अव्यक्त नामनहीं प्रगटहै ऐश्वर्य जाको पावननाम पवित्ररूप परावर जो जड़चैतन्य जीवताके विभोनाम स्वामी परमात्मा प्रकृतजोमाया ताकेस्वामी सो प्रगट नाम वामन रूपहोकरि प्रत्यक्षहोतभये चंद्रमाहै शेखर नामशिरके ऊपरजाके अनघनाम निष्पापअजनाम जन्मरहित अमितनामअकृतरूप जाको अविछिन्ननाम पूर्णरूप वृषभेश जो नन्दीतिहके ऊपरचढ़िकरि चलनेवाले श्यामजलद जो मेघतैसो है आभानाम दीप्तिशरीर की श्यामवर्ण मौलि जो मस्तक तासो जटातेहि विषैं सुरतटिनि जो गङ्गाजू तथा सितनाम उज्ज्वलपुष्पकोजो माला सो सोभतहै वसन जो वस्त्र किंजल्कनाम कमलकी धूली तेहि सदृश अर्थात् पीतांबर कों धारणकिये तथा चक्रसुदर्शन सारंग नाम धन्वादर नामशंख अरुकमल कौमोदकी नामगदा अतिबड़ीयाक्ष सबकोधारण किये मारजो कामदेव सोई उन्मत्तकरि नामहस्ती ताके नाशकरबेको मृगराज नाम सिंहरूप नौमि नाम हम नमस्कार करतहैं अंधक नामजो असुरसोई उरगनाम सांपभयो ताके लीलबेको गरुड़रूप अकलनाम कलारहित अर्थात् पूर्णरूप सकलतें पर नाम ऊपर अर्थात्श्रेष्ठ ज्ञान अरुगोनाम इंद्रीतेहिते अतीतनाम परेगुण जो राजसादि ताकी वृत्ति जो वासना ताके हरणकर्त्ता सिंधु सुत जो जलंधर ताकोगर्व पर्वत सदृश ताके नाशकरबेको वज्ररूप पार्वती

जुके ईशभवजो शिवजू भक्ता है प्रियजाकी भक्तानन्द को कामधेनु रूप जो हरि दुर्घट नाम कठिन विकट नाम भयानक भारी जो विपत्ति ताके हरनहार नर्मदनाम विलासके दाता बरदनाम बर के दाताबिरजनाम रजोगुणते रहित अनवद्याखिल नाम सबदूषणतें रहित विपिनि आनन्द जो काशी ताके बीथिन्ह नाम गलिन्ह मो विहार कर्त्ता इन्दनाम पाप पुण्य सोपान नाम सीढ़ी सम नाम बरोबर अर्थात् चढ़बेमो क्लेशनहीं यह पदविषें भगवानको शिवजू को प्रसिद्ध जोनाम तथा सुलभ जोशब्द ताको अर्थ नहीं लिखे ॥४९॥

मू०। देवभानुकुलकमलरविकोटिकन्दर्पछबिकालकलिव्याल मिव वैनतेयं। प्रबलभुजदण्डपरचण्डकोदण्डतूणबर विशिखबलमप्रमेयं। अरुणराजीवदलनयन सुखमायन श्यामतनकांतिवर वारिदाभं। तप्त कांचनवस्त्र शस्त्र विद्यानिपुन सिद्ध सुरसेव्य पाथोजनाभं। अखिललावण्यग्रहविश्वविग्रहपरम प्रौढ़गुणगूढ़ महिमा उदारं। दुर्द्धर्षदुरदुर्गस्वर्गअपवर्गपति भग्नसंसारपादपकुठारं। शापबसमुनिवधूमुक्ताकृतविप्रहितयज्ञरक्षण दक्षपक्ष कर्त्ता। जनकन्टपसदसिशिवचापभंजन उग्रभार्गवागर्वगरिमापहर्त्ता। गुरुगिरागौरवअमरसुदुस्त्यज्यराज्यत्यक्तश्रोसहित सौमित्रिभ्राता। संगजनकात्मजामनुजमनुसृत्यअजदुष्टवधनिरतत्रैलोक्यत्राता। दण्डकारण्यकृतपुण्यपावनचरणहरणमारीचमायाकुरंगं। बालिबलमत्तगजराजइवकेशरीसुहृदयसुग्रीवदुखराशिभंगं। रिच्छमर्कटविकटसुभटउदभटसमरशैलसंकाशरिपुत्रासकारी। बद्धपाथोधिसुरनिकरमोचन सकुलदलनदससीशभुजबीसभारी। दुष्टविबुधारिसंघातअपहरणमहिभार अवतार कारणअनूपं। अमलअनवद्यअद्वैतनिर्गुणसगुणब्रह्मसुमिरामिनरभूपरूपं। शेषश्रुति शारदा शंभुनारदसनकगणतगुणअन्तमहिंतवचरित्रं। सोइरामकामारिप्रियअवधपतिसर्वदादासतुलसीत्रासनिधिवहित्रं॥ ५०॥

टी०। कोटिन्हकन्दर्प जो कामदेव ताकी छबि है जेह शरीर विषें कालकलि जोकलिकाल सोई व्यालइवनाम सर्पके सदृशताके नाश करबेको वैनतेयं नाम गरुड़रूप प्रबल जोदोऊ भुजदण्ड तेह करि प्रचण्डजोको दण्डनाम धन्वातथा तूणजो तरकश येहविशिष जो बाणबल है अप्रमेय जाको यह सब को धर नाम धारण किये

अग्निकरि तप्त जो सोनातैसो है वर्णजाको पाथोज नामनाभनाम नाभीतें उत्पन्नभयो कमलजाके अखिलनाम संपूर्णलावण्य जो सोभाताके गृहसमस्त बिश्वहै विग्रह नाम शरीर जाको विराट रूप विषैं परमनाम उत्कृष्टप्रौढ़ नाम बलयुक्त गुणगूढ़ नाम गुप्तउदार महिमाजाकी अर्थात् ऐश्वर्य्यको गुप्तकरि राजकुमार को लीला करतहैं दुर्द्धर्षनामदुःखकरिकै धर्षना अर्थात् तिरस्कार को उनहीं करिसकेहैं दुस्तरनाम जाको लीलास्वरूप नाम अपारहै दुर्गनाम कठिन अर्थात् शत्रुनाम जाकोजो रावणादि तेहके हथियारंन्हको प्रवेशनहीं स्वर्ग अपवर्ग जोमोक्ष तेहके पति भक्तन्ह के हृदय विषैं संसाररूप पादप जो हक्षताके भञ्जकरबेको कुठारनाम टांगारूप मुनिवधू जो अहिल्या सुकृतनाम ताकोपाप और शापतें छोड़ावनेवाले विप्र हितनाम विश्वामित्र के अर्थ यज्ञके रक्षाकरबे मो दक्षनाम समर्थ अपने भक्तन्ह के पक्षकर्त्ता उग्रनाम तीव्र है तेज भार्गवनाम परशुरामजू को खागर्वनाम बड़ो जो गर्व तेहगर्व को गरिमा नाम गरिष्टता ताके अपहर्त्ता नाम नाश कर्त्ता गुरू जो दशरथजू तेहको गिराजो आज्ञाताको गौरवनाम बड़ाई तेहकरि अमरजो देवतन्ह को सुदुस्त्यज्यनाम दुःखोंकरि त्यागकरबे योग्य नहीं ऐसा जो राज्य श्रीनाम राजलक्ष्मी ताको त्यक्तनाम त्याग करत भये सौमित्रि जोलक्ष्मणजू भाई तेहसहित मनुज मनुजत्व नाम मनुष्यके लीलाको आश्रयकरिकै वास्तव अजनाम जन्मरहित अर्थात् ब्रह्मरूपकाहै वासोमनुष्य नाट्यकरत भये तासो हेतुकहत हैं दुष्ट जो रावणादि ताकेवधमो तत्परतेह कर्मतें तीनोंलोक के रक्षकसष्ट हैं भालु बानर जो विकट सुभट जो बड़े बीर सब ताके मध्यमो उद्भट नाम श्रेष्ठबीर संग्रामविषैं पर्वत संकासनाम सदृश जो रिपुनाम कुम्भकर्णादि ताकेनास करनेवाले तेहबानर भालुके सहायकरि बांध्योहै समुद्रको तथा देवतन्ह को निकर जो समूह ताको मोचन नाम छोड़ावतभये रावणादि को वधकरिकै दुष्टजो देवतन्ह के शत्रु संघात नाम समूह सोई पृथ्वी को भाररूप ताके अप हरण नाम नाश के अर्थ अवतार जाको कारण अनूपं नाम समस्त ब्रह्माण्डके कारण आश्चर्यरूप तथा गुणलीलादि अमलनाम मलरहित अनवद्यनाम दूषण रहित अद्वैतनाम जेहसदृश दूसरो नहीं इच्छाकरि निर्गुण सगुण ब्रह्महोतहैं ऐसा जो मनुष्य राजा

रूप ताको सुमिरामि नाम स्मरण करे हैं शेषादि जाके चरितको अन्त नहीं पावत हैं कामारि जो शिव ताके प्रिय बास को नि-धिनास स्थान जो संसार तासो पद्मो जो तुलसीदास ताको बहिचं नाम बाहर करनेवाले अथवा नौकारूप ऐसो जो श्रीरघुबर ताको हम स्मरणकरे हैं यह भाव है ५० ॥

मू० । जानकीनाथरघुनाथरागादितमतरणितारुण्यतनतेजधामं ।
सच्चिदानंदआनन्दकन्दाकरंविश्वविश्रामरामाभिरामं।नील
नववारिधरसुभगशुभकांति कटपीतकौशेयवरवसनधारी ।
रत्न हाटक जटितमुकुटमंडित मौलिभानुशतसदृश उद्योत
कारी।श्रवणकुण्डलभालतिलकभ्रूरुचिर अतिअरुणअंभोज
लोचनविशालं।वक्रअवलोकत्रैलोक्यशोकापहंमाररिपुहृद-
यमानसमरालं। नासिका चारुसुकपोलद्विजवज्रद्युतिअधर
बिंबोपमामधुरहासं । कंठदरचिबुकवरवचनगंभीरतरसत्य
संकल्पसुरत्रासनासं।सुमनसुविचित्रनवतुलसिकादलयुतंमृदुल
वनमालउरभ्राजमानं । भ्रमतआमोदवशमत्तमधुकरनिकर
मधुरतरमुखर कुर्वन्तिगानं। शुभगश्रीवत्सकेयूरकंकणहार
किंकिणीरटतिकटितटरसालं। बामदिशिजनकजासीनसिं-
हासनंकनकमृदुवल्लिवत्तरुतमालं।आजानुभुजदण्डकोदण्ड
मंडितबामबाहु दक्षिणपाणिबाणमेकं। अखिलमुनिकरसुर
सिद्ध गन्धर्ववरनमतनरनागअवनिपअनेकं। अनघअनछिन्न
सर्वज्ञ सर्वेशखलुसर्वतोभद्रदातासमाकं। प्रणतजनखेदविच्छे
दविद्यानिपुणनौमिश्रीरामसौमित्रिसाकं।युगुलपदपद्मसुख
सद्मपद्मालयंचिन्हकुलिशादिशोभातिभारी।हनुमन्तहृदिवि-
मलकृतपरममंदिरसदादासतुलसीशरणशोकहारी ॥५१॥

टी० । रागादि संसार विषै प्रीति सोई तम नाम अन्धकार ताके दूरकरबेको तरणिनाम सूर्यरूप तेहको तारुण्य नाम दोप-हरको जो तेजतेह तेजको धाम नाम गृह है तन जाको सतचित आनन्दके कंद नाम मूल तथा आकर नाम खानि अर्थात् जीवन्ह के आविर्भाव को आश्रयभूत सम्पूर्ण विश्वके विश्राम रूप ऐसे जो रामजू सो अभिरामंनाम अतिरमणीय यहारमा जो लक्ष्मी ताके अभिराम नाम सुखदाई कांति जोदीप्ति तेहके करनेवाले मुकुट करि मण्डितनाम आच्छादित है मस्तकजाको अर्थात् मुकुट को

धारण किये उद्योतनाम प्रकाश वक्रनाम मुखताकों अवलोकसों प्रकाश सो त्रैलोक्यके शोककों अपह नाम नाशक मार रिपु जो शिवजू ताकों हृदय जो मानसरोवर तुल्यतामें हंसरूप द्विजजो दांत सो वज्र जो हीरा की दुतितेहु तुल्य अधर जो ओठसो विंबनाम टेकोलके फलकोउपमाजाकोकण्ठजाको दरनामशंख सदृश कण्ठते शंखकी समता रेखाको कियो है चिबुक नामडाढ़ी सेष बचन गंभीरतर नाम अतिशय उरविषें शोभतजो वनमाला ताके चारों ओर भ्रमत नाम उड़तहैं आमोद नाम सुगन्ध यसे उन्मत्त जो मकरन्द के समूह जो अतिशय मधुर सुस्वर नाम बर्बर होकर गान करतहैं कटितट नाम कटिभाग विषै रसंयुक्त किंकिणी जो क्षुद्रघंटिका सोरटतिनाम शब्दकरतिहै बामभागविषै सिंहासनके ऊपर आसीन नाम बैठी जनकजाजो श्री जानकी जी सो जैसे सोनाको कोमल बल्लीनाम लतातमालके वृक्षसहित बतनाम तहत शोभाहै लंबे जो भुजदण्डताको दण्ड जो धन्वा सो मण्डितनाम शोभतहै बाम बाहु विषैं तथा दक्षिण हस्त विषैं एकबाण कोलिये सम्पूर्ण जोमुनि तथा समूह जो देवतादिं अनेक जो अवनिप नामराजासो प्रणाम करतहैं जाकोंसर्वेश जो सर्वके स्वामी खलुनाम निश्चय करिके सर्वतो नाम सब प्रकार भद्रनाम कल्याणके दाता अम्बाकोंनाम हमऐसे जीवन्हकों प्रणामकरत जोजनताके खेदके विच्छेद जोनाशविद्या तामेंनिपुण लक्ष्मणजूके साकंनाम सहित ऐसे जो रघुबर ताकों नौमिनामहमनमस्कार करैंहैंदोऊ जोचरणकमल सुखको सद्म नामस्थान पद्मा जोलक्ष्मी ताकोआलयजोगृह महाबीरके हृदयको कियोहै निर्मलमन्दिर अन्वतस्पष्टहै ॥ ५१ ॥

मू० । कोशलाधीशजगदीशजगदेकहितअमित गुणविपुलविस्तार
लीला । गायंतितवचरितसुपवित्रश्रुतिशेषशुकशंभुसनकादि
मुनिमननशीला ।वारिचरबपुषधरभक्तिनिस्तारपरधरणिकृ-
तनाममहिमातिगुर्वी । सकलयज्ञांशमय उग्रविग्रहकोडमर्दि
दनुजेशउद्धरणउर्वी।कमठअतिविकटतनकठिनपृष्ठोपरीभ्रम
तमंदरकंडुसुखमुरारी ।प्रकटकृतअमृतगोइन्दिराइंदुवृन्दा-
रकावृन्दआनन्दकारी । मनुजमुनिसिद्धसुरनागत्रासकदुष्ट
दनुजद्विजधर्ममर्य्यादहर्त्ता। अतुलमृगराजवपुधरित विदरि-
तअरिभक्तप्रल्हादअह्लादकर्त्ता। छलनबलिकपटबटुरूपवामन

ब्रह्मभुवनपर्यन्तपदतोनिःकारणं। चरणनखनीरचैलोक्यपावनप-
रमविबुधजननीदुसहशोकहरणं। क्षत्रियाधीशकरिनिकरवर
केशरीपरशुधरविप्रशशिजलदरूपं। बीसभुजदण्डदशशीश
खंडनचंडवेगसायकनौमिरामभूपं। भूमिभरभारहरप्रगट
परमाब्रह्मनररूपधरभक्तहेतू। वृष्णिकुलकुमुदराकेशराधार
मणकंसबंशाटवीधूमकेतू। प्रबलपाखण्डमहि मण्डलाकुल
देखिनिंदकृतअखिलमखकर्मजालं। शुद्धबोधैकघनज्ञानगुण
धामअजबुद्धअवतारबंदेकृपालं। कालकलिजनितमलमलिन
मनसर्वनरमोहनिशिनि बिड़जमनांधकारं। बिष्णुयशपुत्र
कल्कीदिवाकरउदितदासतुलसीहरणबिपतिभारं॥ ५२॥

टी०। स्पष्टहै यह पदविषें दसावतार कहतेहैं वारिचर नाम जलमो चलनेवाले जो मत्स्यताके स्वरूप को धारणकरि भक्तनके निस्तारमें तत्पर धरनी जो पृथ्वीकृतनाव नामताही को नावकरत भये प्रलयके समुद्र विषें महिमाहै अतिगुर्वी नामगरिष्ट अर्थात् श्रेष्ठ जाकी सकल जो यज्ञता को अंश जो स्वरूप तन्मय उग्रनामतेज रूप विग्रह जा शरीर क्रोड़नाम सूकररूप मर्दन करिके दनुजेश जो हिरण्याक्ष उद्धार कियो उर्वीनाम पृथ्वीको कमठरूप अत्यन्त बिकट है शरीर जाको कठिनहै पृष्ठको ऊपर भाग तापर समुद्र मथनके समयमें भ्रमनकरत जो मन्दराचल ताके घूमनेतें कंडुके खुजलावनेमें जो सुख सो होतभयो सुरारि जो कच्छपजू ताकोगो नामधेनु इंदिरानाम लक्ष्मी वृन्दारका नाम देवतादिके मर्य्याद को हर्त्ता दुष्टदनुज जो हिरण्यकशिपु अतुलनाम नहीं है समता जाकी ऐसो सिंहको शरीर धरित नाम धारण करिके बिदरित नाम बिदीर्णकियोहै अर्थात् फारयोहै शत्रुके शरीरको यहचारो अवतार मत्स्यशूकर कच्छपन्हसिंह सत्ययुगमें भये चरण के नखको नीर जो श्रीगंगाजू सो तीनिलोकको परमपावनरूप देवतन्हकी माता जो अदिति ताको नहीं सहबेयोग्य जो शोक सो हरण करत भये अर्थात् इंद्रादिक जो पुत्र ताको छुट्यौ जो स्वर्गको राज्य सो बलिपै लैकरि इंद्रादि को देतभये पुत्रन्ह के आनन्दतें अदितिको सुखभयो एहअर्थहै क्षत्रियन्हके अधीश जो राजा सो हाथीको समूह भयेताके नाशकरबेको श्रेष्ठ सिंहरूप ऐसे जो परशुरामजू ब्राह्मण सवशसि नाम धान्यतुल्य ताके पुष्टकरबेको मेघरूप प्रचण्डहैबेग-

वानको जाके ऐसो जो श्रीरघुवरताको नौमिनाम हम नमस्कार करे हैं यह तीन अवतार वामन परशुराम राजजू चेतामें भये इष्वाकुल कोईश भयो ताके उदय करवे को राकेश नाम चन्द्रमा रूप कंसादि जो सोई वांसके अटवी नाम बन भये ताके जलाइवे कें धूमकेतु नाम अग्नि ऐसे जो श्री कृष्णचन्द्र प्रबल जो पाखण्ड तेहकरि पृथ्वीमंडल को आकुल नाम व्याप्त देखि निंदनाम निंदा योग्यकियेहैं सम्पूर्ण यज्ञकेकर्म समूहकोंशुद्धजो बोधएकनाम मुख्य घननाम निबिड़ज्ञान रूप ऐसे जो बुद्ध अवतार तेहकों हम बंदन करतहैं यहदो अवतार कृष्णचन्द्र बुद्धद्वापरके समाप्तमेंभये कलि-कालते उत्पन्न जो मलतेहके करिमलानमन जो सब मनुष्य मोह रूपी रात्रि तेहविषैं निबिड़मन जोम्लेच्छरूप अंधकार तेहकेनाश करबेका विष्णुजित जो ब्राह्मणताके पुत्र होकरि कलंकीरूप सूर्य उदयहोंगे कलिकालके समाप्तमे ॥ ५२ ॥

मू० । सकलसौभाग्य प्रदसर्वतोभद्र निधिसर्वसर्वेशसर्वाभिरामं ।
सर्वहृदिकंजमकरंदमधुकररुचिररूपभूपालमणिनौमिरामं
सर्वसुखधामगुणग्रामविश्रामप्रदनाम सर्वास्पदमतिपुनीतं ।
निर्मलंशांतसुविशुद्धबोधायतनक्रोधमदहरणकरुणानिकेतं ।
अजितनिरुपाधिगोतीतमव्यक्तविभुमेकमनवद्यमजमद्वितीयं
प्राकृतंप्रगटपरमात्मापरमहितप्रेरकानंतवंदेतुरीयं । भूधरं
सुन्दरंश्रीवरंमदनमदमथनसौंदर्यसीमातिरम्यं । दुःप्राप्य
दुःप्रेच्यदुःतर्क्यदुःपारसंसारहरसुलभ मृदु भावगम्यं । सत्य
कृतसत्यरतसत्यव्रतसर्वदापुष्टसंतुष्टसंकष्टहारी । धर्मवर्मब्रह्म
कर्मबोधैकद्विजपूज्यब्रह्मण्यजनप्रियमुरारी । नित्यनिर्ममनित्य
मुक्तनिर्मानहरिज्ञानघन सच्चिदानन्द मूलं । सर्वरक्षक सर्व
भक्षकाध्यक्षकूटस्थगूढ़ार्चिभक्तानुकूलं । सिद्धसाधकसाध्यवाच्य
वाचकरूपमंत्रजापकजाप्यसृष्टिस्रष्टा । परमकारणकंजनाभज-
लदाभतनुसगुणनिर्गुणसकलदृश्यद्रष्टा । व्योमव्यापकविरज
ब्रह्मवरदेशवैकुण्ठवामनविमल ब्रह्मचारी । सिद्धवृन्दारकावृन्द
वन्दितसदाखण्डिपाखण्डनिर्मूलकारी । पूरणानन्दसन्दोहअ
पहरणसंमोहअज्ञानगुणसन्निपातं । वचनमनकर्मगतशरण
तुलसीदासत्रासपाथोधिइवकुम्भजातं ॥ ५३ ॥

टी० । सर्वओरतें भद्रजो कल्याण ताकेरहवेको निधिनाम पात्र

सर्वनाम विश्वरूप सबकेईश्वर सर्व ब्रह्माण्डको अभिरामनाम सुखकारी सर्व जो शिवजूताके हृदयकमलमें अनुरागरूप जोमकरन्द नामरस तामेंलुब्धभ्रमर सद्गुण समूहजाको विद्यामको दाता नामजाकी सर्वास्पदंनाम सर्वसाधनको आश्रय तथा अति विचित्र निर्मलशान्त अतिविशुद्ध बोधजोज्ञान ताकेनिकेत नाम गृहकाहू के जोतवेयोग्य नहीं उपाधिकरिके रहित अर्थात् मायाके आधीन नहीं गो जो इन्द्री तातें अतीतंनामपरे अव्यक्तनाम निर्गुण रूप करि प्रकट नहीं विभुंनाम व्यापक एकै नाम मुख्य अनवद्यं नाम निर्दूषणं अजंनाम जन्मरहित अर्थात् ब्रह्मादिककेपिता अद्वितीयं नाम जेहके समदूसरो नहीं प्राकृतंनाम मनुष्यके शरीरकरिप्रकट भये हैं परमात्मा परमहितनाम पितामातादि जो हितकारी सो मिथ्याहित करतहैं परमेश्वर सत्यहितकारी हैंतथा सबके प्रेरक अनन्तनाम जाको अन्तनहीं ऐसे जो तुरीयरूप ताको हमवन्दन करेहैं भूधरंनाम शेषरूपकरि पृथ्वीको धारणकिये लक्ष्मीकेवरंनाम स्वामी अपने सुन्दरताकरि कामदेव के मदको मथनकर्त्ता सौंदर्य ताके सीवां अतिरमणीय विशुखन्ह को दुख करि तर्कमें न आवे दुःखोंकरि जाको पारनहीं सन्मुख जीवन्हको संसारके हरनेवाले तथा कोमल जो भावनाम प्रीतितेहकरि सुलभतें गम्यंनामजानने योग्य सत्यके कर्ता अर्थात् सत्यकरि जगतहै यहहेतुतें कारणरूप सदा पुष्टंनाम दिव्य नित्यदेहहै जाको संतुष्ट नाम पूर्णकाम धर्म रूप वर्मनिनाम वखतरको पहिरे ब्रह्म जोनिर्गुणरूपताको प्रतिपादक उत्तरमीमांसा अर्थात् उपनिषद्रूप कर्मनाम कर्म प्रतिपादक वेदत्रयी ताकेवोधमें एकनाम मुख्यब्राह्मणतें पूजनीय यद्यपि ब्राह्मणहै पूज्यजाको ब्रह्मण्यनाम ब्राह्मणके जोभक्तजनसो प्रियजाको सुरनाम असुरकेशत्रु नित्यनाम एकरस निर्ममनाम ममतारहित अर्थात् समस्त विश्वरूप आपे भये अपने तेदूसरो पदार्थ नहोंतो केहपर ममता होय नित्यमुक्त नाम माया को बल जापर नहीं निर्मानाम मानरहित अर्थात् मानहोतो तो सब्बी शूकरादि रूप नहीं होते निविड्ज्ञान रूप अर्थात् एकरस ज्ञानजाको सत नाम सर्वकालमें जो रहे चिततास जहके सत्तातें जड़जो इन्द्री देहादि सो अपने २ कार्यको करेहैं आनन्द नाम जेह के लेश तें समस्तविश्वके जीव आनन्द पावतहैं मूलंनाम पूर्वोक्त सबकेकारण

सबके रक्षक तथा सबके भक्षकशे यमकाल ताहूके अध्यक्ष नाम स्वामी कूटस्थनाम निर्विकार गूढ़ार्चि नाम अवतार ग्रहण करि गुप्त कियेहै ईश्वरतारूप तेजको भक्तन्हके ऊपर सानुकूल सिद्धनाम साधनकरि सिद्धि जो पायेसाधक जो सिद्धिके वास्ते साधनकरत हैं साध्यनाम जेहवस्तु वास्ते साधनहोतहै वाच्यनाम वचनको जो विषय वाचकनाम तेहि विषयको जो कहै रूपनाम तद्रूप अर्थात् सर्वज्ञ श्रीरामजू हैं तथा मंत्रनाम ओंकारादि जापकनाम मंत्रको जो जपैजाप्य नाम जेहवस्तु के अर्थ जपहोत है सृष्टि नाम समस्त ब्रह्माण्डस्रष्टा नाम उत्पत्ति कर्त्ता परम कारण जो ब्रह्मादि ताह्न के उत्पत्ति के हेतु कंजनाम कमलभये नाभीतें जाके सकल दृश्य जो संसार ताके द्रष्टा अर्थात् चैतन्यरूप सबपदार्थको देखतहैं व्योम जो आकाश तद्वत व्यापक विरजनाम रजोगुणतें रहितशुद्ध सतोगुणरूप ब्रह्मनाम निर्गुणरूप वर देयनाम वरके देनेवाले जो शिवादि ताह्नकेईश वैकुण्ठवासमनहै नाम जाको तथा निर्मल ब्रह्म-चारी सिद्धगण वृन्दारका नाम देवतन्हके समूह तेहकरि वंदित नामवंदन योग्यसर्वदा पाखण्डनको खण्डनकरि निर्मूलकरनेवाले अर्थात् वेदमार्ग के रक्षक स्वर्ग आनन्दको पाय संमोह नाम अत्यन्त मोह अर्थात् स्त्री पुत्रादि विषे ममता अज्ञान गुण नाम राजस तामस सात्विकताको सन्निपातं नाम एकत्रहोनो अर्थात् तीनों गुणके मिलेतें जो शरीरादि तामें अहंकार बुद्धि तेहकरि अपने स्वरूपको तथा भगवत् स्वरूपको विस्मरणहोनो सोई अज्ञान तेह सबको अपहरण नाम नाशकरनेवाले कायमनो वाकतें शरणको प्राप्त जो तुलसीदास ताको नरकादि त्रासरूप जो समुद्र ताके नाशकरिवेको अगस्त्यरूप ॥ ५३ ॥

मू०। देवविश्वविख्यातविश्वेशविश्वायतन विश्वमरयादव्यालादिगा-
मी। ब्रह्मवरदेशवागीशव्यापकविमल विपुलबलवान निर्वान
स्वामी। प्रकृतिमहतत्त्वशब्दादिगुणदेवताव्योममरुदग्निअम-
लांबुउर्वी। बुद्धिमनइन्द्रियप्राणचित्तात्मकालपरमाणुचिच्छ
क्तिगुर्वी। सर्वमेवात्रतद्रूप भूपालमणि व्यक्तमव्यक्तगतभेद
विष्णो। भुवनभवदंगकामारिवंदितपदद्वंद्वमंदाकिनीजनक
जिष्णो। आदिमध्यांतभगवंतत्वं सर्वगतमीशपश्यन्तिजेब्रह्म-
वादी। यथापटतंतुघटमृत्तिकासर्पस्रगदारुकरिकनककट

कांगदादी । गूढ़गंभीरगर्वघ्नगूढ़ार्थचितगुप्तगोतीतगुरज्ञान
ज्ञाता । गेयज्ञानप्रियप्रचुरगरिमागारघोरसंसारपर पार
दाता । सत्यसंकल्प अतिकल्प कल्पांतकृत कल्पनातीत
अहितल्पवासी । वनजलोचन वनजनाभ वनदाभ वपुवनचर
ध्वजकोटिलावण्यरासी । सुकरदुःकरदुराराध्यदुर्व्यसनहर
दुर्गद्वंद्वदुर्गार्त्तिहर्त्ता । वेदगर्भार्भकादभ्रगुणगर्वअर्वाकपर
गर्वनिर्वापकर्त्ता । भक्तअनुकूलभवशूल निर्मूलकरतूलअघ
नामपावकसमानं । तरलतृष्णातमीतरणिधरणीधरणशरण
भयहरणकरुणानिधानं । बहुलवृन्दारकावृन्दपदद्वन्द
मन्दारमालोरधारी । पाहिमामीशसंतापसंकुलसदादास
तुलसीप्रणतरावणारी ॥ ५४ ॥

टी० । संपूर्ण विश्वके आयतन नाम गृहतथा विश्व के मर्य्यादा अर्थात् जेह परमेश्वरको कियो ब्रह्मादिक तथा वर्णाश्रम अपने २ मर्य्यादके ऊपरस्थितहैं व्यालादनाम गरुड़तेह के ऊपर चढ़िकरि चलनेवाले बरके दाताजो शिवादि ताहूकेईश तथावाग जो सर-स्वती ताकेईशनिर्वाण नामजो मोक्षताके स्वामीप्रकृतिजो प्रधान माया महत्तत्वनाम चित्तहै स्वरूपजाको शब्दादि जो शब्दस्पर्शरूप रसगंध गुण जो राजस तामस सात्विक देवतादशों इन्द्रीकेनेत्रके सूर्य कर्णकेदिशा जिह्वाके वरुणघ्राणके अश्विनीकुमार स्पर्शकेवायु यह पांचज्ञानइन्द्रीके देवताभये तथा वाक्के अग्नि हाथ के इन्द्र पांवके विष्णुलिंग और उपस्थकेप्रजापति ब्रह्मागुदके निऋतिएह पंचकर्म इन्द्रीकेदेवता तथा व्योमनाम आकाश मरुतजोवायुतथा अग्नि निर्मलअंबु नामजल उर्वी जो पृथ्वी बुद्धिमन इन्द्रिन्हके नाम पूर्वकहि आये प्राणनामप्राण अपानसमान उदान व्यानयह पंच मुख्यहैं तथाचित्त अरु आत्मा नाम अहंकार मन बुद्धिचित्त अहं-कार यही चारों अन्तष्करणहैं मनको देवता चन्द्रमाबुद्धिकेब्रह्मा हिरण्यगर्भ चित्तके भगवान बासुदेव अहंकारके शिवजू काल जो लवनिमेष पक्षमासादि परमानुनाम पृथ्वीकोकारण सूर्यकेकिरण कीरफजो गृहविषैं मोखाके द्वारा आवतहै तामेजो उड़ता रज कण देखिपड़ैहैं तथा चैतन्य शक्ति जो शुबीनाम श्रेष्ठजीव सहित सर्व नामजा सर्वतत्वप्रकृति आदि चित्तशक्ति अंतपर्यन्त एवनाम निश्चयकरिकै अत्रनाम ब्रह्माण्ड विषै त्वद्रूप नाम तुम्हारौ रूप है

अर्थात् आपै अनेक नाम अनेक रूपकों ग्रहण किये हौ हे भुपाल नणिव्यक्तनाम प्रगट अव्यक्त जोनहीं प्रगट सो सब तुमहीं हौ बास्तव गत नाम नष्ट भयो है भेदनाम नाना बुद्धि जेहतें हे विष्णु संपूर्ण भवन तुम्हारो अंगहै सो विराटरूपके वर्णनसो स्पष्टहोतहै जिष्णो नाम जै शील अर्थात् सर्वथा जै कों प्राप्त आदि अन्त मध्य तीनों काल सो हे भगवान तुम सर्वब्रह्मांडमोगतं नामव्याप्तहौ हेईश ऐसो तुम्हारो स्वरूप पश्यन्ति नाम देखेहैं ब्रह्मवादी नामवेदकेवक्ता कैसे व्याप्त देखे हैं सो जनावत हैं जैसे वस्त्रमो सूत व्याप्त है घटमो जैसे मृत्तिका पुष्पकेमाला सो जैसेसर्प ज्ञानकरि जो बनावरीकी हाथीतासो दारुनाम जैसेलकडी कटक जो कड़ा अंगद जो बाजू आदि लेकर भूषनतासो जैसे सोना अर्थात् घटनाम पात्र है आदि अंतमध्यमोकेवलमृत्तिका निश्चय होतहै ऐसेसब दृष्टांतको एकभाव है गूढ़नाम सबमो व्याप्त यहां ब्रह्मादिके बुद्धिकों कठिनहै स्वरूप ज्ञानजाको गंभीरनामजाके हृदयमो समस्तब्रह्मांड सावकाशपूर्वक निवासकियोहै यहां जाके हृदयकों ब्रह्मादिनहीं जानि सकत हैं गर्भघ्ननाम गर्वकेनाशक अर्थात् भक्तजो नारदादिक तिन्हकेगर्वकों नाहीं राखत दुष्ट जो असुरादि ताके गर्वकोंनाशकरैं यासें कहा कहनो गूढ़ जो अर्थ ताके वित नाम ज्ञाता अर्थात् अंतर्यामी रूप होकरि सबके हृदयके जानकार गुप्तनाम निर्गुणरूपकरि चैतन्य सत्तातें समस्त विश्वमो छिपेहुये यह हेतुतें गोतीतनाम इन्द्रिन्ह तें परे तथा श्रेष्ठजो ज्ञानज्ञाता जो ज्ञानके कर्त्ता चैतन्यरूप जीव ज्ञेय जो ज्ञानकरि ज्ञाता जेहकोजानेहै सो सब आपैहौ तथाज्ञान जो बोधसो है प्रियजाको प्रचुरनाम समूह गरिमा नाम श्रेष्ठता ताके आगारनाम गृह भयानक जो संसार तेहके परपार नाम पारकेदाता अर्थात् संसारके नाशकसत्यहै संकल्पजाको अतिकल्प जो महाप्रलय ब्रह्माके समस्त आयुर्बलको समाप्ततथा कल्पांत जो नैमित्तिकप्रलयब्रह्माके दिनवितीतभयेरात्रिके प्रवेशमोब्रह्माके सृष्टि को लयहोतहै तेह दोउप्रलयके कर्त्ता अर्थात् परमेश्वरके आज्ञा वितरेक सृष्टिको उदयलय नहींहोतकल्पना जोनामातर्क तेहतें अतीतनामपरे अहिजो शेषनाग सोई तल्पनाम शय्या तेहकेऊपर निवासकर्त्ता बनज नाम कमल तैसो नैन बनज नाम कमल उदय भयोहै नाभीतें जाके बनदनाम मेघ तैसो आभानामदीप्ति शरीर

विषें बननाम जलचरनाम तामेंचलने वालेजे मगरसोई है ध्वजा जाके अर्थात् कामदेवताके कोटिजो समूह तैसो लावण्यनाम शोभाके राशिभूतहै सुकरनाम सनमुख जीवन्हको सुलभकरिप्राप्त दुःख करनाम बिमुखन्हकों कठिन तथा दुराराध्य नाम दुखों करिके आराधनकरबेयोग्यनहीं दुर्व्यसननाम सुमुखजीवन्हको दुष्ट जो व्यसन विषयभोगको लालसा यहीव्यसन नाम क्षयताके हरण कर्त्ता दुर्गनाम कठिनअर्थात् जाकेतत्वविचारमें शीघ्र प्रवेशनहीं दुर्द्धर्षनाम दुःखोंकरिजाकोधर्षनाअर्थात् तिरस्कारकोजनहींकरि-सकै दुर्गार्तिनाम कठिनजो क्लेशसो आर्तजीवन्हके हरनेवाले वेद गर्भ जो ब्रह्माताके अर्भकनाम बालक जो सनकादिक अदभ्रनाम बहुतगुणको जो गर्व अर्थात् ब्रह्माजोपिता ताकेनिकट सनकादिक जायकरि प्रश्नकरतभये कि गुणचित्तमें तथाचित्तगुणमें लिख्योहै गुणशब्द इहांविषें वाचकहै यहदोऊ बिलग कैसेहोयसो ब्रह्माजू को चित्तसृष्टिके कार्यकरि व्यग्ररह्यौ यहसूक्ष्मप्रश्नको उत्तरशीघ्र न भयो यहहेतुतें सनकादिकको अपने प्रश्नरूपगुणको गर्वभयो ताको अर्वाक नामपहिले वातमें उत्कृष्टजो गर्वताको निर्वापनाम नाश कर्त्ता अर्थात् ब्रह्माजू को प्रश्नको समाधान चित्तमें न आयोतब भगवान को ध्यानकरतभये तेहसमयमें हंसकेरूपकरि प्रगटभये सनकादिक देखिकरिपूछेकिं आपकोहै तबहंसिकरि स्वामीसन-कादिकतें कहतभये कितुमअज्ञहै व्यर्थज्ञानीको अभिमानकियेहै काहेकि चैतन्यदृष्टिकरि देखोतो सबचैतन्य एकरूपहै तथा शरीर दृष्टिकरि सभपंचभौतिक एकरूपहै तबकोआपहै यहप्रश्न केवल अज्ञानरूपहै यहरीतितें सनकादिको गर्वकोंपहिले बचनबोलतेदूर करतभये यहअर्थ है अधिकजो सनकादिकके प्रश्नकोसमाधान के हेतुकरिजो बार्तासो बिस्तारके भयतेंनहीं लिखेअरुशब्दकोअर्थभी एतनेकहबेसो लगिगयो तरलनाम चंचलजो तृष्णासोई तमनाम राचीभई ताकेनाशकरबेकों तरणिनाम सूर्यरूप वकुलनामअत्यन्त वंदारुनाम वंदनकरबे योग्य वृन्दारकानामजो देवतन्हको समूहते-हकरि पदद्वंदजाको मन्दारके जो पुष्पताको मालाहृदयमें धारण किये ऐसे जो आपसो पालनकरो मां नाम हमको हे ईश संसार कोजो तापतेहकरि संकुलनाम व्याकुल सर्व्वदा ऐसाजो तुलसीदास सो आपकोप्रणाम करतहै हे रावण के शत्रु ॥ ५४ ॥

मू०। देवयंतसंतापहरविश्व विश्रामकर रामकामारि अभिरामकारी। शुद्धबोधायतनसच्चिदानन्दघनसज्जनानन्दवर्द्धन खरारी। शीलसमताभवनविषमतामतिशमन रामरमारमण रावणारी। खड्गकरचर्मवरवर्मधर रुचिरकटितूणशरशक्तिसारंगधारी। सत्यसंधाननिर्वाणपदसर्वहितसर्वविज्ञानगुण ज्ञानशाली। सघनतमघोरसंसारभरशर्वरीनामदिवसेशखर किरणमाली। तपनतीक्ष्णतरुणतीव्रतापघ्नतपरूपतनुभूपतम परतस्वामी। मानमदमदनमत्सरमनोरथमथनमोह अंभोधिमन्दरमनस्वी। वेदविख्यातवरदेशवामनविरज विमलवागीशवैकुण्ठस्वामी। कामक्रोधादिमर्दनविवर्द्धन क्षमा शान्त विग्रहविहगराजगामी। परमपावनपापपुंजमुंजाटवीअनलइवनिमिषनिर्मूलकर्ता। भुवनभूषणदूषणारिभुवनेशभूनाथ श्रुतिमाथजयभुवनभर्ता। अमलअविचलअकलसकल संतप्त कलिविकलताभंजनानंदरासी। उरगनायकशयनतरुणपंकजनयनक्षीरसागर अयनसर्ववासी। सिद्धकविकोविदानन्द दायकपदद्वंदमन्दात्ममनुजैर्दुरापं। यत्रसंभूतअतिपूतजलसुर सरीदर्शनादेवअपहरतिपापं। नित्यनिर्मुक्तसंयुक्तगुणनिर्गुणानंतभगवंतन्यामकनियन्ता। विश्वपोषणभरण विश्वकारणकरण शरणतुलसीदासचासहंता॥ ५५॥

टी०। कामारिजो शिवजू ताको अभिरामनाम आनन्दके कर्त्ता शीलनाम चंकोचयुक्त स्वभावै जेहगुणकरि सब बसीभूत होत हैं समता नामसर्व भूतमो परमेश्वर बुद्धिकरनो विषमतानाम नाना मति अर्थात् देहके भेदतें जीवके स्वरूपमो भेद देखनो रमाजो लक्ष्मी तामो रमण कर्त्ता सत्य है संधाननाम संकल्प जाको तथा मोक्ष के दाताशाली नाम पूर्वोक्त गुणादिकरि सोभनशील भयानकजो संसार तेहकोभार जो बोझसो सर्वरीनाम राती सघनहै अज्ञान रूपी अन्धकार जामो ताके दूरकरबेको नामजाको दिवसेशनाम सूर्यरूपखर नामतीक्ष्ण है किर्णसमूह जेहको तपननाम तापरूप तीक्ष्णनाम अत्यन्त चोखा तरुण नाम प्रबलतीव्रनाम अतिशीघ्र है वेगजाको अर्थात् रुकि न सके ऐसो जो संसारको तापताकोघ्ननाम नाशक तपरूपनामतपस्याके मूर्तिशरीर जाको तमजोअविद्यातेह तें परें तपस्वीनामपिताके आज्ञाकरि चौदह वर्षपर्यन्त तपस्वीके

वेषतें तपस्याकरतभये मानादिके मथनकर्ता मोहरूपी समुद्रकों मथन
करबेकों मन्दराचल रूपमनस्वी नामस्वतंत्र यद्वा सर्वदामन प्रसन्न
जाको शान्त जो रससोई विग्रहनाम शरीर जाको अटवी नामवन
श्रुतिमाथनाम वेदके मस्तक अर्थात्मस्तककेकाटे शरीर नहीं रहत
तैसे भगवान बिनवेद्य वेदकृत पदार्थनही ठहरे चार वेदभगवानै
कोगावैहैं यहतें माथकहे सकलनाम ब्रह्मस्वरूप संनामसब्यकतम [?]
रूपजो कलिकालतेहकरि भक्तन्हको जो विकलता ताके भंजनकर्ता
जाको पदद्वन्दमन्दहै आत्मानाम अन्तःकरण जाको ऐसेमनुष्यतेंदुराप
नामदुखोंकरिप्राप्त होबे योग्यनहीं संभवनाम उत्पन्नदर्शनात्नाम
दर्शनमात्रतें एवनाम निश्चयकरिनित्य निर्मुक्तनाम सर्वदा अविद्या
करिछूटे दिव्यगुणकरि संयुक्त निर्गुणनाम प्राकृतगुणतें रहित अनन्त
जाको अन्तनहीं भगवन्त नाम षड्ऐश्वर्य युक्त न्यामक नाम समस्त
विश्वको नियमन करनेवाले अर्थात् अपनेसामर्थ्यतें जीवमात्रको
अपनेआधीनकर्ता यद्वादण्डकेदाता ऐसेजो कालयमनवज्ञाताहू [?]
को नियन्तानाम अन्तर्यामीरूपतें प्रेरक समस्त विश्वके पुष्टकर्त्ता
अरुभरनेवाले तथासमस्त विश्वके कारणनाम उत्पत्तिस्थान कारण
नाम ब्रह्माण्डके उत्पत्तिको जो सामग्री प्रधानतत्त्व अहंकारादि
साऊप्रापेभये होसोई तुलसीदासके त्रास नाशक ॥ ५५ ॥

मू० । देवदनुज सूदनदयासिन्धु दंभापहनदहन्दुर्दोष दुःपाप
कर्त्ता । दुष्टतादमनदमभवनदुःखैाघहर दुर्गदुर्वास नाना
कर्त्ता । भूरिभूषणभानुमन्त भगवन्तभवभंजनाभयदभुवनेश
भारी । भावनातीतभवबंद्यभवभक्तहितभूमिउद्धरणभूधरण
धारी । बरवदनदानवागोशविश्वायतनविरजवैकुण्ठमंदिर-
विहारी । व्यापकव्योमवन्दारुवामनविभोब्रह्मवितब्रह्मचिन्ता-
पहारी । सहजसुन्दरसुमुखसुमनशुभसर्वदाशुद्धसर्वज्ञस्वच्छन्द
चारी । सर्वजितसर्वकृतसर्वज्ञत सर्वहितसत्यसंकल्पकल्पा-
न्तकारी । नित्यनिर्मोहनिर्गुणनिरञ्जननिजानन्दनिर्वाणनि-
र्वाणदाता । निर्भरानंदनिष्कम्पनिःसीमनिर्मुक्तनिरुपाधिनि-
र्ममविधाता । महामङ्गलमूलमोदमहिमायतन मुग्धमधुम-
थनमानदअमानी । मदनमर्दनमदातीतमायारहितमंजुमा
नाथपाथोजपानी । कमललोचनकलाकोशकोदण्डधरकोश-
लाधीशकल्याणराशी । यातुधानप्रचुरमत्तकरिकेशरीभक्तम-

नपुण्यआरण्यवासी। अनघअद्वैत अनवद्य अव्यक्तअजअमित अविकारआनन्दसिन्धो। अचलअनिकेतअविरलअनामयअनारम्भअंभोदनादघ्नबन्धो। दासतुलसीखेदखिन्नआपन्नइह शोकसम्पन्न अतिशयसभीतं। प्रणतपालक रामपरमकरुणाधामपाहिमामुर्विपतिदुर्विनीतं॥ ५६॥

टी०। दक्षके अपहं नाम नाशक दहन नाम जलावने वाले दुर्दोषनाम अत्यन्त जोकौटिल्यादिताकेदम जो बाह्यइन्द्रीनिग्रह ताकेभवननाम आश्रयअर्थात् जेहके कटाक्ष वितरेक इन्द्रिआदि वश्य नहीं होती दुःख को श्रोघ जो समूह ताके नाशक दुर्गनाम कठिन दुर्वासना नाम परस्त्री पर द्रव्यादि विषें अभिलाष ताके नाशक भूरिभूषण नाम समूह भूषणरूप अर्थात् ब्रह्माण्ड के यहां बहुत भूषण परिधान किये भानुमन्त नाम सूर्य सदृश प्रकाशमान अभयद नाम अभयके दाता भुवनके ईश भारीपदतें ब्रह्मादिकके स्वामी भावनातें परे अर्थात् निर्गुणरूपकरि सनकुदरादितें अगम्य भव जो शिवजु तातें वन्दनीय तथा शिवभक्तनके हितकारी वाराह रूप करि पृथ्वी के उद्धार कर्त्ता भूजो पृथ्वी ताके धरण नामधारण किये जोपर्वत ताको धारण करनेवाले अर्थात् गोवर्द्धन धारी धन दाभ नाम मेघ सदृश श्याम आकाशवत व्यापक वंदारुनाम वन्दनयोग्य ब्रह्मवित् नाम ब्रह्मज्ञानी तथा आपै ब्रह्म अर्थात् उपास्य उपासक रूप यद्दा ब्रह्म जो वेद ताके वितनाम ज्ञाता ब्रह्मनिर्गुण रूप सहज सुन्दर अर्थात् भूषणादितें सुन्दरता नहीं सुमुख नाम प्रसन्न मुख जाको सुमन नाम सुन्दरहै मनजाको शुभनाम मङ्गलरूप सर्वदा शुद्धस्वरूप जाकोसब के ज्ञाता स्वच्छन्द नाम स्वतंत्र चलने वाले सर्वजित नाम समस्त ब्रह्माण्डआधीन जाके सर्वभूतनामसबको धारणकिये अर्थात्जाके सत्ता वितरेक कोऊ जड़ चैतन्य नहीं है सर्व कृतनाम ब्रह्मादिकके कर्त्ता नित्यनाम सर्वदाएकरस निर्मोहनाम मोहरहित निरंजननाम माया रहित निजानन्द नाम अपने स्वरूपानन्द तें पूर्ण निर्वाण नाम मोक्ष रूप तथा भक्तन्ह के मोक्ष दाता निर्भरनाम अतिशय आनन्द रूप निष्कम्प नाम अचल निस्सीम नाम जाको सीवांनहीं अर्थात्रूप गुणनाम जोशाअनन्त जाको निर्मुक्तनाम सर्वदामुक्त अर्थात् जीवादि ब्रह्मापर्यन्त साधनकरि मुक्तहोत हैं

परमेश्वर स्वतःसिद्धिसुक्त हैं तथा उपाधि जो माया तेहकरि रहित निर्ममनाम ममतारहित अर्थात् जब सब रूप आपै तब केहपर को ममताकरें विधाता नाम सबके विधान कर्त्ता मुग्धनाम अज्ञ जो मधुनाम असुर ताके मथनकर्त्ता मदातीत नाम मदरहित मंजु नाम सुन्दर रमानाम लक्ष्मी ताकेस्वामी कमल है हाथविषैंकला समस्त विद्या ताके कोशनाम भण्डार भक्तन्हके मन सोई पुण्य बन भयो ताको निवासकर्त्ता सिंहरूप अनिकेतनाम जाको गृह नहीं अर्थात् समस्त ब्रह्माण्ड है गृह जाको तब एकगृह सो ममता कैसें होय अविरलनाम निरन्तर एकरूप अनामयनाम रोगादि रहित अर्थात् मनुष्यादिवत पंचभवतिकं रूप नहीं सर्वकाल सो एकरस अनारम्भनाम कोई आरंभ नहीं अर्थात् बालकेलिवत् सृष्टिसंहार कर्त्ता अंभोदनाद जो मेघनाद ताकेंग्ननाम नाशक जोलक्ष्मणजू ताके बन्धोनाम भाई दासतुलसी संसारके तापको जोखिद तेहतें खिन्न नाम दुर्बल आपन्ननाम प्राप्त इहनाम येहसंसार प्रवाहमा शोक करि सम्पन्ननाम युक्त तेहते अतिशय डरेहैं श्रीराम पालन करो मांनाम हमको हे उर्विपति नाम पृथ्वीपति कैसे हम दुर्विनीतं नाम नम्रताते रहित अर्थात् यमादिके भयकरि यह नम्रताकेवचन सब कहतहैं स्वभावकरि सर्वथा क्रूरकेवल अपनो प्रणतपालता अरु कृपालता जोगुण ताकेओर देखिकरि त्राणकरो यह अर्थ है ५६ ॥

मू०। देवदेहि सतसङ्गनिजअङ्गश्रीरङ्गभवभङ्गकारणशरणशोकहारी
ये तुभवदंघ्रिपल्लवसमाश्रितसदाभक्तिरतविगतसंशय मुरारी।
असुरसुरनागनरयक्षगन्धर्वखगरजनिचरसिद्धये चापि अन्ये।
सन्तसंसर्गत्रयवर्गपरपरमपदप्रायनिःप्राप्यगतित्वयि प्रसन्ने।
वृत्रबलिबाणप्रह्लादमयव्याधगजगृद्धद्विजबन्धु निजधर्म त्यागी।
साधुपदसलिलनिर्धूतकल्मषसकलश्वपचयमनादिकैवल्यभागी
शांतिनिरपेक्षनिर्ममनिरामय अगुणशब्द ब्रह्मकपरब्रह्मज्ञानी।
दक्षसमदृक्स्वदृक्विगतअतिस्वपरमतिपरम रति बिरति तव चक्रपानी। विश्वउपकारहितव्यग्रचितसर्वदा त्यक्त मदमन्य कृतपुण्यरासी। यत्रतिष्ठंतितत्रैवअजसर्वहरिसहित गच्छन्ति क्षीराब्धिवासी। वेदपयसिन्धुसविचारमन्दरमहाअखिल मुनि वृन्दनिर्मथनकर्त्ता। सारसतसङ्गमुद्धृत्यइतिनिश्चितं वदत श्री कृष्णवैदर्भिभर्त्ता। शोकसन्देहभयहर्षतमतर्षगणसाध्यसद्युक्ति

विच्छेदकारी । ययारघुनाथश्रायकनिशाचर चमूनिचय निर्दलनपटवेगभारी । जयकुचापिसमजन्मनिज कर्म वस भ्रमत जगयोनिसङ्कट अनेकम् । तत्वत्वद्भक्तिसज्जन समागम सदा भवतजेरामविश्रामसेकम् । प्रबलभवजनितचव्याधिभेषजभक्ति भक्तभैषज्यमद्वैतदरसी । सन्तभगवन्तअन्तरनिरन्तरनहीं किमपिमतिमलिनकहदासतुलसी ॥ ५७ ॥

टी० । यह पदमें स्वामी तें गोसाईं जाचत हैं देव सतसङ्ग द्योपद सत्य वाचक है सो भगवत् स्वरूप नाम धाम लीला दास यह सब सत्यहै ताकोसङ्ग सो सतसङ्गपरि साधसंगमो सतसङ्ग शब्द मुख्य है सो काहे कि साध सङ्गकरि यह सबकी प्राप्ति होति है सो सत्सङ्ग कैसो है निज अङ्ग नाम आपको रूङ्ग है हे श्रीरङ्ग फेर कैसो रूत्सङ्ग है संसार के नाशको कारण शरणमें प्राप्त जो जीव ताके संसार कृत शोक को हरण करत है जेह के सङ्गके महिमा को कहे सो साधु कैसे हैं तेहिको जनावत हैं जेतुनाम जेभगवतनाम तुम्हारो चरणपल्लव को संनाम सम्यक आश्रय किये तथा सर्वदा आपके भक्तिमो तत्पर विशेषतें नष्टभयोहै सर्वसन्देह जाके हृदय तें अर्थात् निश्चय करि तुम्हरे चरणको अवलम्ब किये हैं हेमुरारि ताको साधु कहिये असुरादि तथा जेचनाम पुनः अन्यं नाम जेतने कहे तेहितें अन्यऊ जो जीव अपिना निश्चय करिके संसर्ग तें त्रिवर्ग जो अर्थ धर्म काम तेहितें परनाम श्रेष्ठ जो परम्पद मोक्ष ताको प्रापनाम प्राप्तभये कैसो परम्पदहै निःप्राप्य गतिनाम अनेक साधनतें प्राप्त होवे योग्य नहीं केवल त्वयि नाम तुम्हारे प्रसन्ने नाम प्रसन्न भयेतें मिलत है अर्थात् प्रसन्न होकरि कृपाकटाक्षतें जेहजीवको देखतहौ तब साधु मिलत हैं तेहिके सङ्गकरि पश्चात् अज्ञानादिको नाशहोयहै तेहितें भक्ति ज्ञानादिको प्राप्तहद्वारा आपमिलतहौ यह क्रमहै केहको ऐसो भयो है तेहिको जनावत हैं वृत्रनाम वृत्रासुर बाणनाम बाणासुर द्विजबन्धुनाम अजामिल जो अपने ब्राह्मणके धर्मको त्यागकियो निजधर्म त्यागी केवल अजामिल कों विशेष है काहे कि ऊपर प्रह्लादादि को गिनाये सो धर्मके चलावने वाले हैं उनको धर्म त्यागी कहनो अयुक्त होत है यह सब साधु के चरणाश्रित करि निर्धूत कल्मषनाम रहित पाप होकरि सकल जो ऊपर कहे तथा स्वपच यवन आदि लेकरि

अनेक मोक्षके भागीभये अर्थात् वृत्र, बाण, प्रह्लाद, बलि, मय, यह,
पाये असुरयोनि गजेन्द्रपशुयोनि गृध्रपक्षी योनिव्याध स्वपच मनुष्यमें
अधमयोनि अजामिल यद्यपि ब्राह्मणयोनिमें उत्पन्न तद्यपि धर्म
भ्रष्टते स्वपचादि में गिनतो भई यमनादि पदतें अनेक मन्द जीव
गनिकादि को ग्रहणभयो याको यह भावहै कि ऐसेऊ मन्दजीव
अधम योनिमें उत्पन्न सो साधु सङ्गकरि कृतार्थभये उत्तम जो वर्णा-
श्रम धर्मवानजीव सत्सङ्गको प्राप्तहोय ताको महिमा कहा कहनो
सोई सो तो औ सुगन्ध सदृशहै अब साधुको लक्षणकहतहैं शांतनाम
सङ्कल्पविकल्प रहित हृदय जाको निरपेक्ष नाम ब्रह्मलोक पर्यन्त
की वासना नहीं निर्मल नाम ममता रहित अर्थात् सत्कार ति-
रस्कार दोऊमें समबुद्धि जाको निरामयनाम संसार को सम्बन्धी
जो काम क्रोधरूप रोगतेहिकरि रहित अगुणनाम तामसादि गुण
करि जो विषमतासों नहींहै जाको शब्दब्रह्म जो वेदताके एक नाम
मुख्यज्ञाता तथा परब्रह्मके स्वरूप को ज्ञानजा को दक्षनाम ज्ञान
भक्तिवैराग्य भगवत्सम्बन्धी कर्मके अनुष्ठान करबेमें समर्थ सम-
दृकनाम सर्वभुतमें परमेश्वर दृष्टि स्वदृकनाम अपने स्वरूपमें दृष्टि
विगत नाम विशेषकरि नष्टभयोहै अतिप्रबल अपनो परायो बुद्धि
जाको परमनाम उतकृष्टरति जो प्रीतितव नामतुम्हारे चरणक
मलमें है चक्रपाणि विरतिनाम परमवैराग्य संसारतें विश्वके उप-
कारके अर्थव्यग्रहै चित्त जाको सर्वदात्याग कियेहैं मदमन्यु नाम
क्रोधको कियो है पुण्यको समूह ऐसे जोसाधु सोवच नाम जहां
तिष्ठंति नाम टिकत हैं तत्रैवनाम तहंई अज जो ब्रह्माजू सर्व जो
शिवजूतेहिसहित क्षीरसमुद्रके वासीजो हरिसो गच्छन्ति नामजात
हैं यहअन्वयहै सत्संगके प्रभावको और केहूने कह्यौहै सो जना-
वतहैं कि सर्वोपरिजो भगवानताको हृदयहैं वेदरूपी जो पैसिंधु
नाम क्षीरसमुद्र तामें विचाररूप मंदराचल सहा नाम विस्तार
उहांसुर असुरमथन कियेहूहां अखिलजो मुनिकेसमूहतेहसहित
श्रीभगवान कृष्णचन्द्र मथनकरत भये क्षीरसमुद्रतें अमृत निकस्यौ
इहां वेदरूप समुद्रते सारनाम अमृततुल्य जो सत्सङ्ग ताको उद्ध-
त्यनाम निकालकरि वैदर्भी जो रुकुमिणी ताके भर्त्ता श्रीकृष्ण-
चन्द्रमें वदतनामकहतभये इतिनिश्चितंनाम एतनेनिश्चितहै अर्थात्
चारों वेदको सिद्धान्त है सत्संग जो जीव साधुके शरण होत है

ताकोशोकनाम जन्ममरण कृतसंदेहनाश यहसाधनतें सोकल्याण होयगो यह निश्चय नहींहोनो भयजोयमादिकरि हर्ष जो विषय भोगके प्राप्तिमोतम अज्ञान अर्थात् अपने स्वरूपको भूलनो तर्ष-नामतृष्णा अर्थात् वस्तुपाये हूं तृप्ति नहीं यह सबकेगण जो समूह ताकों साधुसद्युक्तिनाम समीचीन जो युक्ति अर्थात् शास्त्र सम्मत जो युक्ति तेहकरि बिच्छेद नाशकरतहैं साधुन को वचनको वचन शोकादिके नाशमो कैसे समर्थहै तामोदृष्टान्तदेतहैं जैसे श्रीराम जूको बाणनिशाचरन्हके चमूजो फौजनिचै नाम समूहताके निर्दल-ननाम अति नाशकरबेमों पटुनाम समर्थ भारी बेगजाको है तैसे हे देवयन कुचापिनाम जहांकहूं मेरा जन्म होय अपने कर्मके बस होकरि भ्रमनकरत जगत विषै नाना योनि अनेक संकटरूप तत्र नाम तहांत्वत नाम तुम्हारी भक्ति तथा सत्संग सर्वदा भवतनाम होउमेनाम हमकोहेरामजू संसारप्रवाह मोपड्यो जो जीवताको विश्यामएकंएकहतनोईहै प्रबल जो संसारते उत्पन्न भैव्याधि नाम दैवकृत पीड़ासीं तोष्णादि भूतकृत नाम सर्प व्याघ्रादि कृत तथा देहकृत जोनानारोगादि ताको भेषजनाम औषध तुम्हारी भक्ति है अर्थात जब भक्तिभई तब शरीराभिमान त्याग होतहै तेह हेतु करिदैवकृतजो पीड़ाताको पायकरि व्याकुलता नहीं होति तथा सर्वभूतमो परमेश्वर दृष्टिभक्ति प्रभावतें होतहै तेहहेतुतें भूतमात्र वैरनहीं करते तथा भक्तिके उदयमों संयम नियम होतहै तेहतें शरीर कृतरोगादि नहींहोते यह रीतितें भक्तिमहारानी त्रैताप रूपतो त्रिदोषकी व्याधिताको औषधहोतिहै अब औषध को देने वाला चाहिये सो भक्त जो साधु सोई भैषज्य नाम वैद्य है सो वैद्यनाटिका देखनेमों प्रवीणचहिय यहां अद्वैतदर्शी नामपरमेश्वर बितरेक दूसरोपदार्थ नहीं देखतहैं यही नाड़ीज्ञानको प्रवीणता है पूर्वोक्त लक्षणयुक्त सन्ततेहतें भगवानतें अन्तर नाम भेद निर-न्तर नाम सर्वदा नहीं है किमपि नाम किंचितोमति मलिन जो तुलसी सो कहै इहां मलिनपद नम्रताके अर्थ है ५७ ॥

मू० । देवबेहिअवलंबकरकमलकमला रमणदमन दुखशमनसन्ताप
भारी । अज्ञानराकेशग्रासन विधुंतुदगर्वकामकरिमत्तहरि
दूषणारी । बपुषब्रह्माण्डसुप्रवृत्तिलंकादुर्गरचितमनदनुजमय
रूपधारी । विविधकोश सौध अतिरुचिर मंदिरनिकरसत्वगण

प्रसुखचयकाटककारी । कुनपअभिमान सागरभयंकरघोर
विपुलअवगाहदुस्तरअपारं । नक्ररागादिसंकुलमनोरथस-
कलसंगमङ्कुलवीचीविकारं । मोहदशमौलितद्भ्रातअहं-
कारपाकारिजितकामविश्रामहारी । लोभअतिकायमत्सर
महोदर दुष्टक्रोध पापिष्ट विबुधान्तकारी । द्वेषदुखदुर्मुख
दंभखरअकम्पनकपटदर्पमनुजादमदशूलपाणी । अमितबल
परमदुर्जयनिशाचरनिकरसहितषट्वर्गगोजातुधानी । जीव
भवदंघ्रिसेवक विभीषणबसत मध्यदुष्टाटवीग्रसितचिन्ता
नियमयमसकलसुरलोकलोकेशलंकेशवशनाथअत्यन्तभीता ।
ज्ञानअवधेशगृहगेहिनीभक्ति शुभतत्रअवतारभूभारहर्त्ता ।
भक्त संकष्टभवलोक्यपितुवाक्य कृतगमन कियगहन वैदेहि
भर्त्ता । कैवल्यसाधनअखिलभालुमर्कटविपुलज्ञानसुग्रीवकृत
जलधिसेतू । प्रबलवैराग्यदारुणप्रभंजनतनयविषयबनभवन
मिवधूम्रकेतू । दुष्टदनुजेशनिर्वंशकृतदंसहितविश्वदुखहरण
बोधैकरासी । अनुजनिजजानकी सहितहरिसर्वदा दास
तुलसीहृदय कमलवासी ॥ ५८ ॥

टी० । हेकमलारमण अपने हस्तकमलको अवलम्बदेव कैसो है अवलम्बसमस्तदुःखकोदमननामदूरकरत है भारीजोसन्तापताको शमननामशांतकर्ता कैसेआपहो अज्ञानरूपी राकेश जो चन्द्रमा ताकेग्रास करबेको विधुन्तुदनामराहुरूप तथा शरीरादिको जो गर्व अरु काम जो नानाकामना सो उन्मत्तहाथीभयो ताके नाश करबेको हरिनाम सिंहरूपदूषणादिजो असुरताके शत्रुअवरूपक करिसंसार कृतक्लेश जनावतहैं हेदेवअपुष जोशरीर सोईब्रह्माण्ड भयोअर्थात् जवनेपचीस तत्त्वकरिब्रह्माण्डभयोहैतोहीकरिशरीरऊ हैयहहेतुतेंपिण्ड औ ब्रह्माण्डको एकरचना है ब्रह्माण्डमो लंका नगरीहैयहशरीररूपब्रह्माण्डमो इन्द्रिन्हकीजुनामअत्यन्तजोप्रवृत्ति अर्थात् नानाविषयको ग्रहणसोईलंका दुर्गनामकठिन यद्वा दुर्ग नामकिलातथालंकाकोमयनामदैत्यनेबनायोहै यहप्रवृत्तिरूपलंका मनजो मयदैत्यकोरूपधारण किये तानेरचितनामरचा है अर्थात् प्रथमजब अपनेबुद्धिमो लंकाको रचनालैआयो तबनानाबनाउरी हस्तादिइन्द्रिन्हकरि बनावतभयो तथा मयरूप जो मन सो जब नानासंकल्पबिकल्पउठावतहै तबइन्द्रिन्हकीप्रवृत्तिविषयग्रहण को

होतिहै यह समताहै लंकामें अनेक घरहै इहां विविध प्रकार कोशको जो समूह अन्नमै प्राणमै मनोमै विज्ञानमै आनन्दमै सोई अति रुचिर मन्दिरको समूहभयो अर्थात् मन्दिरमो विषय भोग करि विश्रामहोतहै तथा यहजीवबुद्धिको आश्रयनकरि तौन तौन के कोशमें तैसो तैसो रूप ह्वैकरि विषयको भोक्ता होत है जब लंकाकहेतबफौज जमादारयहू कहनो चहियं सोसत्त्वगुण प्रमुख नाम आदिलैकरिअर्थात् सतोगुण रजोगुण तमोगुण यह तीनो कटककारी नाम फौजके करनेवाले अर्थात् जमादारहैं एक २ गुणकरिअनन्त जोमनोरथ सोईकटक सहश्रभयो यहांयहसमता है कि जमादारके आधीन फौजहोतहै सोनाना मनोरथरूपजो फौज सो सत्त्वादि गुणके आधीन है जब जौने गुणको उदय तब तैसोई मनोरथके समूह होतहै लंकाको खाईरूप समुद्र है यहां कुनप जो शरीर तामें अभिमान सोईभयंकर घोरनाम कठिन विपुलअवगाहनाम अत्यन्तअथाहदुस्तरनाम दुखोंकरि पारहोवे जोगनहीं अपारनाम जाकोपारदेखिनहींपरत अर्थात् समुद्रभयं-करादि विशेषणयुक्तहै तैसेअभिमानरूपी समुद्रओरको भयकरेहै अरु अभिमानके आयेदया गुणनहींरहत तेहतेकठिनहै फेरथाह नहींमिलत यहतेअथाहहै समस्तगृहस्थोकोप्रपंच जोजीव छोड़े है ताहूको अभिमाननहीं छूटतयहते दुस्तरहै बुद्धिकेविचारेतेवार पारनहीं देखपरत यहते अपारहै यहसाहश्य है समुद्रमें जन्तु चहियेसो रागादिनाम नाना विषयमें जो अनुराग तेहकरिके संकुलनाम व्याप्त जो मनोरथ सोई सकल नक्र नाम मगरआदि जन्तुभयेअर्थात् ग्राहादि जंतुजीवन्हको पकड़तहैंतैसे जबविषयमें रागभयो तबजीवको सोरागऊपकड़िलेतहै अर्थात् आधीनकरत है विषयमें जोसंगनाम आशक्तितेहकरिजो नाना सङ्कल्प उठेहैं सोईबीची नाम लहरीको शिकार है अर्थात् वायु के सम्बन्धकरि जलमें लहरि उठतिहै वायुके बन्दभयेलहरिको लयहोत है तैसे मनकरि जबविषयको सङ्गहोतहै तबसंकल्पविकल्प नाना उठतहैं संगके छूटे संकल्पविकल्पको नाशहोतहै इहांमन वायुरूप भयो संकल्पविकल्पलहरि तुल्ययहसमताहै जबलंकाकहे तबरावणादि कहनोचहिये सोमोहजो अपने स्वरूपको बिस्मरणसोई रावणहै अहंकारजोआग्रहबुद्धिसोई तत्भ्रातनामकुंभकर्णहैकामजोकाम